मिथुन लग्न

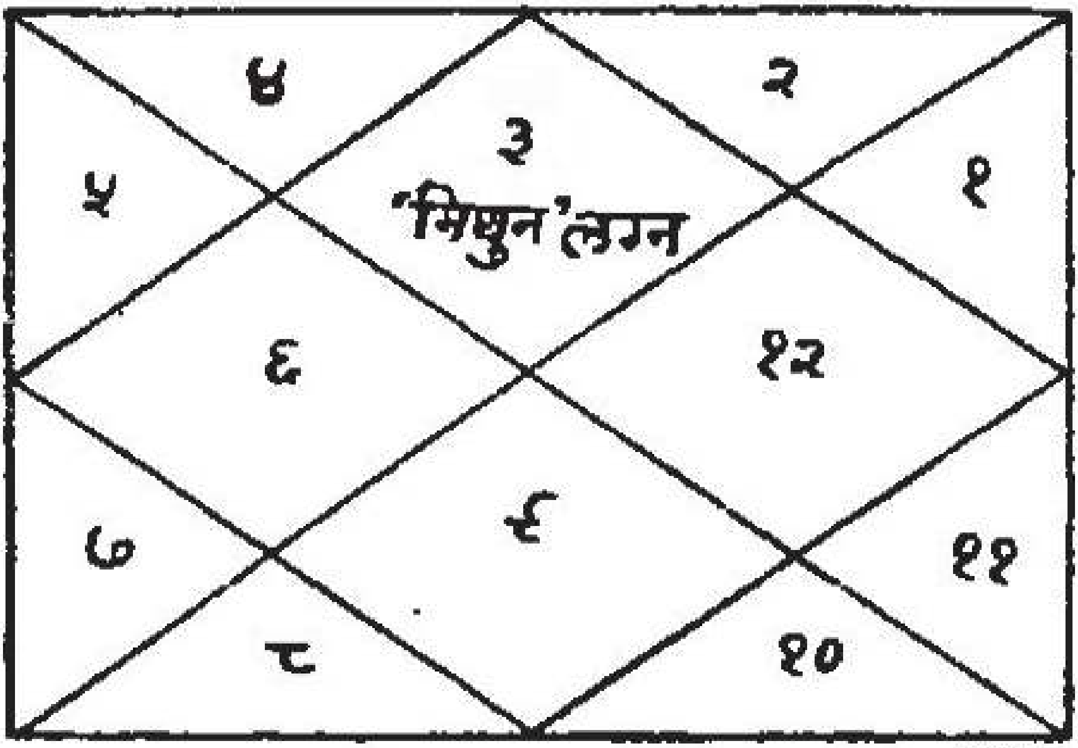

333

['मिथुन' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

'मिथुन' लग्न का फलादेश

'मिथुन' लग्न में जन्म लेने वाले जातक का चेहरा गोल तथा शरीर का रंग गेहुआं होता है। वह नृत्य-वाद्य आदि संगीत की कलाओं का प्रेमी, कवि, हास्य-प्रवीण शिल्पज्ञ, विनम्र, परोपकारी, तीर्थप्रेमी, गणितज्ञ, दूत-कर्म करने में कुशल, ऐश्वर्य-शाली, धनी, सुखी, चतुर, मधुरभाषी, दानी, सुशील, विषयी, स्त्रियों में आसक्त, बहुमित्रवान्, बहु सन्ततिवान्, अनेक प्रकार के भोगों का उपभोग करने वाला, सुन्दर केशों वाला, राजा के समीप रहने वाला तथा राजा द्वारा ही पीड़ा प्राप्त करने वाला होता है।

'मिथुन' लग्न वाला जातक अपनी प्रारंभिक अवस्था में सुखी, मध्यमावस्था में दुःखी तथा अन्तिमावस्था में पुनः सुखोपभोग करने वाला होता है। उसका भाग्योदय ३२ से ३५ वर्ष की आयु के बीच होता है। इस लग्न वाला जातक मध्यम आयु प्राप्त करता है।

'मिथुन' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी फलादेश आगे दी गई उदाहरण-कुण्डलियों में संख्या ३३४ से ४४१ के बीच देखना चाहिए।

गोचर कुण्डली के ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखें, इसे आगे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए।

'मिथुन' लग्न में 'सूर्य' का फलादेश

१. 'मिथुन' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३३४ से ३४५ के बीच देखना चाहिए।

२. 'मिथुन' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी फलादेश, निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'सूर्य'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ३३४
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ३३५
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ३३६
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ३३७
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ३३८
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ३३९
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ३४०
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ३४१
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ३४२
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ३४३
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ३४४
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ३४५

'मिथुन' लग्न में 'चन्द्रमा' का फलादेश

१. 'मिथुन' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३४६ के ३५७ के बीच देखना चाहिए।

२. 'मिथुन' लग्न वालों की गोचरकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस दिन 'चन्द्रमा'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ३४६
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ३४७
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ३४८
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ३४९
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ३५०
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ३५१
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ३५२
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ३५३
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ३५४
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ३५५
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ३५६
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ३५७

'मिथुन' लग्न में 'मंगल' का फलादेश

१. 'मिथुन' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित मंगल का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३५८ से ३६९ के बीच देखना चाहिए।

२. 'मिथुन' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित मंगल का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'मंगल'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ३५८
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ३५९
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ३६०
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ३६१
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ३६२
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ३६३
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ३६४
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ३६५
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ३६६
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ३६७
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ३६८
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ३६९

'मिथुन' लग्न में 'बुध' का फलादेश

१. 'मिथुन' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३७० से ३८१ के बीच देखना चाहिए।

२. 'मिथुन' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'बुध'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ३७०
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ३७१
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ३७२
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ३७३
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ३७४
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ३७५
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ३७६
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ३७७
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ३७८
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ३७९
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ३८०
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ३८१

'मिथुन' लग्न में 'गुरु' का फलादेश

१. 'मिथुन' लग्न वाले को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३८२ से ३९३ के बीच देखना चाहिए।

२. 'मिथुन' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'गुरु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ३८२
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ३८३
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ३८४
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ३८५
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ३८६
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ३८७

(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ३८८
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ३८९
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ३९०
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ३९१
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ३९२
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ३९३

'मिथुन' लग्न में 'शुक्र' का फलादेश

१. 'मिथुन' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३९४ से ४०५ के बीच देखना चाहिए।

२. 'मिथुन' लग्न वालों को गोचर कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'शुक्र'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ३९४
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ३९५
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ३९६
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ३९७
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ३९८
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ३९९
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ४००
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ४०१
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ४०२
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ४०३
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ४०४
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ४०५

'मिथुन' लग्न में 'शनि' का फलादेश

१. 'मिथुन' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४०६ से ४१७ के बीच देखना चाहिए।

२. 'मिथुन' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि'

का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'शनि'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ४०६
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ४०७
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ४०८
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ४०९
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ४१०
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ४११
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ४१२
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ४१३
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ४१४
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ४१५
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ४१६
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ४१७

'मिथुन' लग्न में 'राहु' का फलादेश

१. 'मिथुन' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४१८ से ४२९ के बीच देखना चाहिए।

२. 'मिथुन' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'राहु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ४१८
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ४१९
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ४२०
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ४२१
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ४२२
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ४२३
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ४२४
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ४२५
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ४२६
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ४२७
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ४२८
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ४२९

'मिथुन' लग्न में 'केतु' का फलादेश

१. 'मिथुन' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४३० से ४४१ के बीच देखना चाहिए।

२. 'मिथुन' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'केतु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ४३०
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ४३१
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ४३२
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ४३३
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ४३४
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ४३५
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ४३६
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ४३७
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ४३८
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ४३९
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ४४०
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ४४१

'मिथुन' लग्न में 'सूर्य'

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मिथुन लग्न : प्रथमभाव : सूर्य

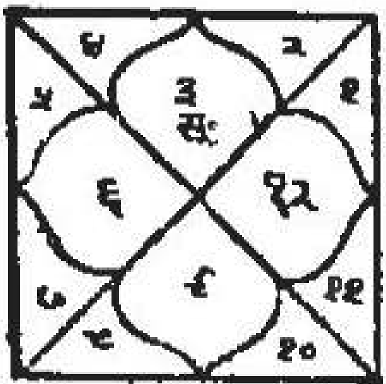

२३४

पहले भाव में अपने मित्र बुध की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक परम तेजस्वी, साहसी, परिश्रमी तथा उद्योगी होता है। वह बड़े-बड़े काम करता है। शरीर पुष्ट होता है। उसे भाई-बहिनों का पर्याप्त सुख भी मिलता है।

यहाँ से सूर्य द्वारा सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने के कारण जातक को व्यवसाय एवं स्त्री-पक्ष में भी सफलता मिलती है तथा उसका गृहस्थ जीवन सुखी एवं स्नेहपूर्ण होता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक बड़ा हिम्मती, फुर्तीला, क्रोधी तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीय भाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मिथुन लग्न : द्वितीयभाव : सूर्य

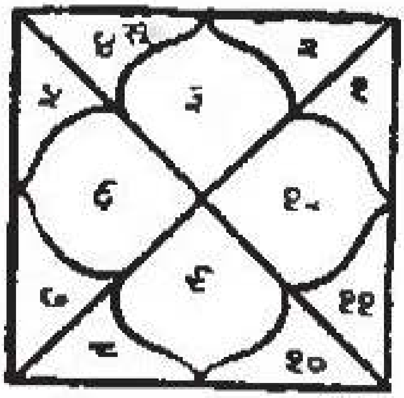

३३५

दूसरे भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर सूर्य के प्रभाव से जातक अपने पराक्रम द्वारा धन तथा कुटुम्ब के सुख को बढ़ाता है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कुछ न्यूनता रहती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव के देखने से जातक को पुरातत्व के लाभ मे कमी रहती है तथा दैनिक जीवन मे भी कुछ अशांति बनी रहती है। ऐसी ग्रहस्थिति का जातक धनी तथा हिम्मती होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मिथुन लग्न : तृतीय भाव : सूर्य

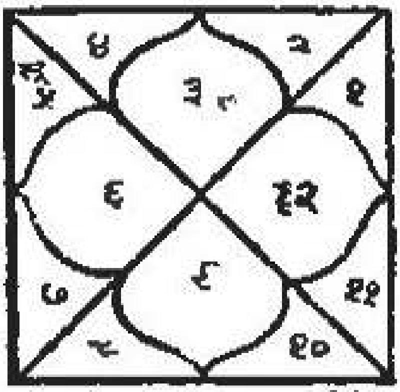

३३६

तीसरे भाव में स्वराशि में स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों की पूर्ण शक्ति मिलती है तथा वह अत्यन्त पराक्रमी भी होत है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण जातक के भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कुछ कमी आ जाती है। सामान्यतः ऐसी ग्रह-स्थिति वाला जातक बड़ा पराक्रमी, प्रभावशाली तथा सुखी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मिथुन लग्न : चतुर्थ भाव : सूर्य

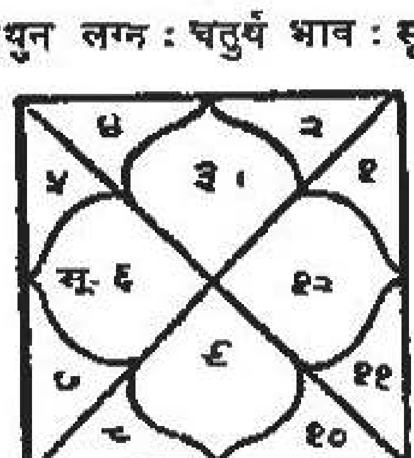

३३७

चौथे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। साथ ही माता, भूमि, भवन, संपत्ति एव सुख का भी लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी तथा प्रभावशाली होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'सूर्य' का-फलादेश

मिथुन लग्न : पंचमभाव : सूर्य

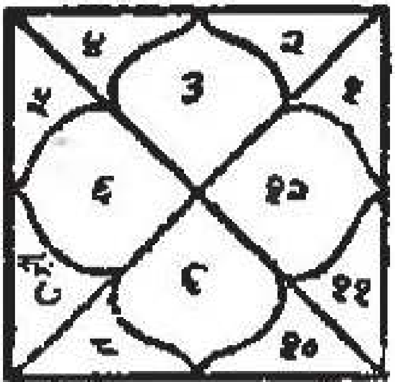

३३८

पाँचवें भाव में स्थित नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक की विद्या-बुद्धि में कमी रहती है तथा सन्तान से कष्ट मिलता है। पराक्रम में भी कमजोरी रहती है।

सातवीं उच्चदृष्टि से मित्रराशिस्थ एकादश भाव को देखने के कारण जातक गुप्त युक्तियों तथा असत्य-भाषण आदि का आश्रय लेकर धन कमाता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मिथुन लग्न : षष्ठभाव : सूर्य

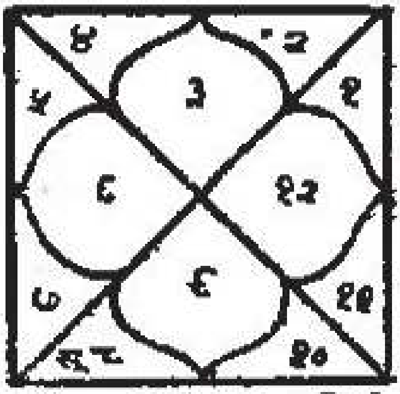

३३९

छठे भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक अपने शत्रुओं पर विजय पाता है। भाई-बहिनों के साथ कुछ वैमनस्य रहता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण खर्च की अधिकता रहती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी कोई अधिक सुख नहीं मिलता। ऐसा व्यक्ति साहसी तथा कठिन परिश्रमी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मिथुन लग्न : सप्तमभाव : सूर्य

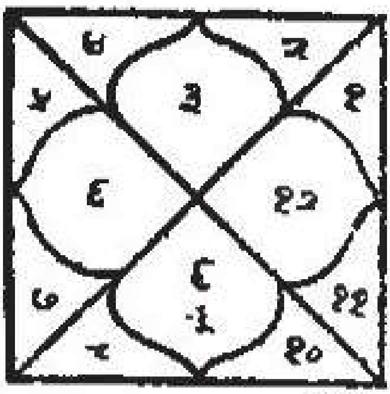

३४०

सातवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को स्त्री से सुख, शक्ति एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है तथा परिश्रम द्वारा व्यवसाय में भी अच्छा लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण जातक को शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रभाव का लाभ भी होता है। ऐसे व्यक्ति का गार्हस्थ्य-जीवन सुखमय होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मिथुन लग्न : अष्टमभाव : सूर्य

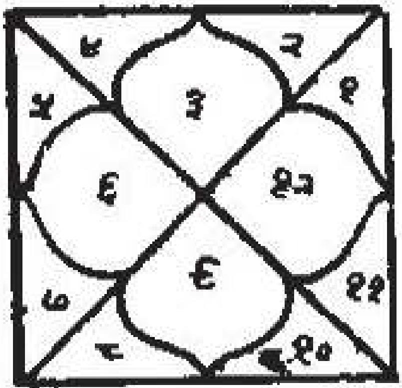

३७२

आठवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को पुरातत्त्व एवं आयु के क्षेत्र में कमी आती है तथा भाई-बहिन का सुख एवं पराक्रम भी न्यून रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण आर्थिक क्षेत्र में परिश्रम से लाभ होता है तथा कुटुम्ब का सामान्य सुख मिलता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मिथुन लग्न : नवमभाव : सूर्य

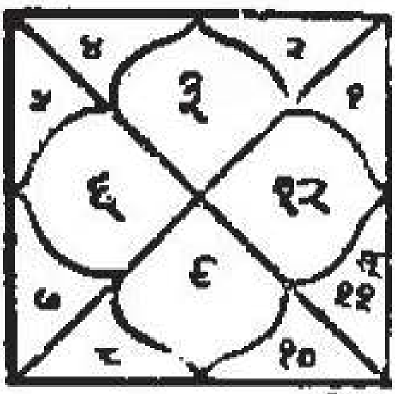

३७३

नवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक कठिन परिश्रम द्वारा भाग्य की उन्नति करता है तथा धर्म-पालन में उदासीन-सा रहता है। भाई-बहिनों से सम्बन्ध भी सन्तोष-जनक नहीं रहता।

सातवीं मित्रदृष्टि से स्वराशि वाले तृतीय भाव को देखने के कारण पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई के द्वारा थोड़ा सहयोग भी प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति परिश्रमी, उद्योगी तथा तेजस्वी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मिथुन लग्न : दशमभाव : सूर्य

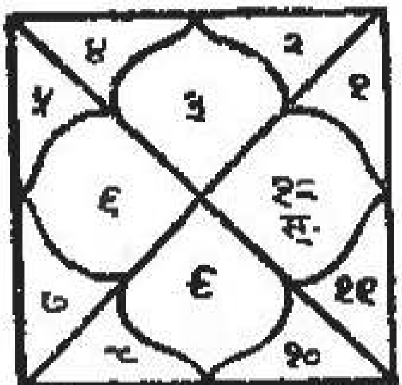

३७४

दसवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को पिता की अच्छी शक्ति मिलती है तथा राज्य एवं व्यवसाय से भी लाभ तथा सम्मान प्राप्त होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भूमि, भवन, सुख एवं मातृ-पक्ष में सफलता मिलती है। ऐसा जातक सुखी एवं सन्तुष्ट रहता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मिथुन लग्न : एकादशभाव : सूर्य

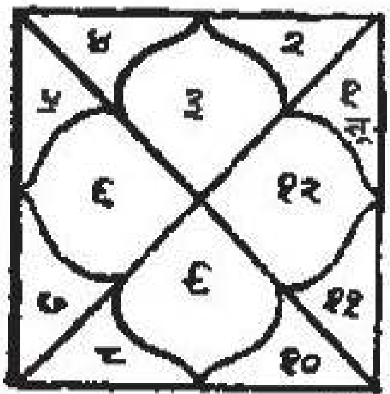

३४७

ग्यारहवें भाव में उच्च राशिस्थ सूर्य के प्रभाव से जातक का पराक्रम बढ़ा रहता है और वह यथेष्ट लाभ प्राप्त करता है। भाई-बहिन के सुख में भी वृद्धि होती है।

सातवीं नीचदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण सन्तान-पक्ष में कुछ कमी आती है तथा विद्या-लाभ में भी रुकावटें पड़ती हैं। ऐसा व्यक्ति रूखे स्वभाव का तथा अत्यन्त परिश्रमी और साहसी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मिथुन लग्न : द्वादशभाव : सूर्य

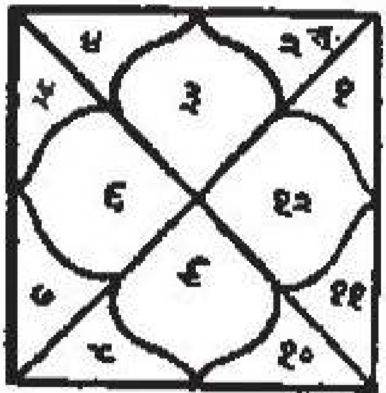

३४८

बारहवें भाव में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रुपक्ष में प्रभाव स्थापित होता है। ऐसा व्यक्ति अपनी भीतरी कमजोरी को दबाकर, ऊपर से बड़ी हिम्मत दिखाता है तथा परिश्रमी होता है।

'मिथुन' लग्न में 'चन्द्रमा'

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मिथुनलग्न : प्रथमभाव : चन्द्र

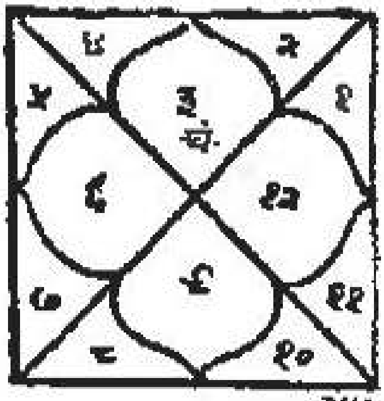

३४९

पहले भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक अपनी शारीरिक शक्ति तथा मनोबल से धनोपार्जन करता है तथा पर्याप्त कौटुम्बिक सुख को भोगता है। ऐसा व्यक्ति सुन्दर, सुखी, धनी तथा यशस्वी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में भी पर्याप्त सफलता एवं सुख की प्राप्ति होती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मिथुनलग्न : द्वितीयभाव : चन्द्र

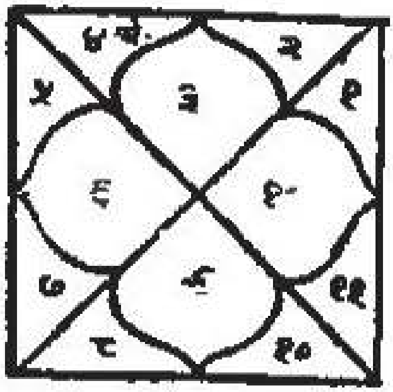

३४७

दूसरे भाव में स्वराशि में स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का पर्याप्त सुख मिलता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण जातक को दैनिक जीवन में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्व की भी हानि होती है। मानसिक रूप से चिन्तित रहते हुए भी ऐसा जातक सुखी तथा यशस्वी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मिथुनलग्न : तृतीयभाव : चन्द्र

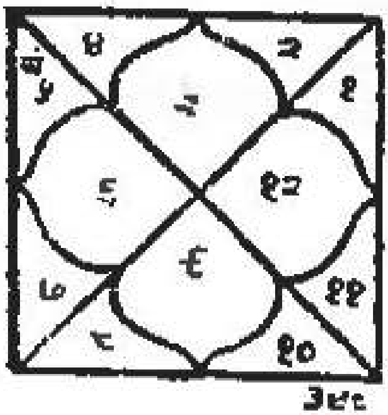

३४८

तीसरे भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के पराक्रम तथा भाई-बहिनों के सुख में वृद्धि होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्योन्नति में रुकावटें आती हैं तथा धर्म का पक्ष भी कमजोर रहता है। ऐसा जातक धनी, प्रतिष्ठित तथा यशस्वी होता है। वह धर्म को विशेष महत्त्व नहीं देता।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मिथुनलग्न : चतुर्थभाव : चन्द्र

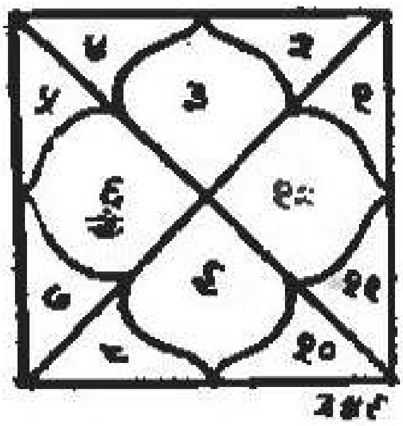

३४९

चौथे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कमी आती है परन्तु भूमि, भवन, सम्पत्ति एवं कुटुम्ब का सुख खूब मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता एवं राज्य के द्वारा भी सुख तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक धनी, सुखी, प्रभावशाली तथा व्यवसाय में सफलता पाने वाला होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मिथुन लग्न : पंचमभाव : चन्द्र

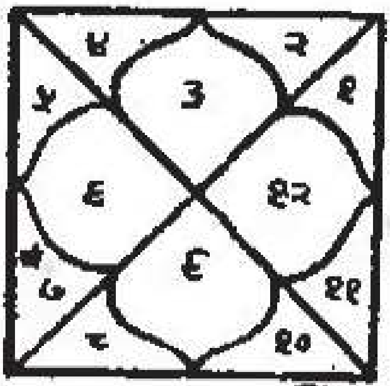

३५०

पाँचवें भाव में सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष में कुछ रुकावटें आती हैं, परन्तु विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में पर्याप्त सफलता मिलती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी अच्छी रहती है। ऐसा जातक सुखी, धनी, चतुर तथा प्रतिष्ठित होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मिथुन लग्न : षष्ठभाव : चन्द्र

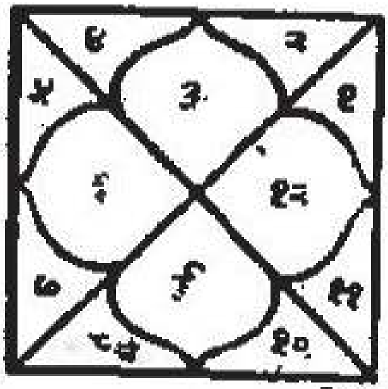

३५१

छठे भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक कठिन परिश्रम द्वारा धनोपार्जन करता है तथा शत्रु-पक्ष द्वारा भी चोट खा सकता है।

सातवीं सामान्य मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्पर्क से लाभ होता है।

ऐसा व्यक्ति धन कमाने के विषय में अपयशी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मिथुन लग्न : सप्तमभाव : चन्द्र

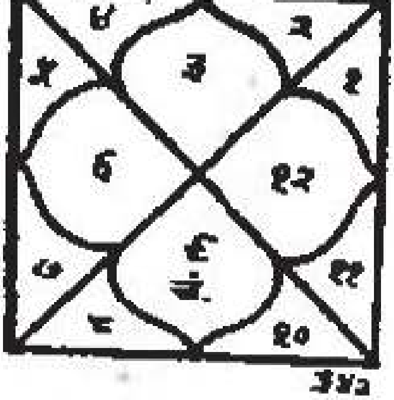

३५२

सातवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष में कुछ रुकावटों के साथ सफलता मिलती है तथा विवाह के बाद भाग्योन्नति होती है। व्यवसाय एवं भोगादि का पर्याप्त सुख भी तभी मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण जातक का शरीर सुन्दर होता है और प्रतिष्ठा भी प्राप्त करता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मिथुनलग्न : अष्टमभाव : चन्द्र

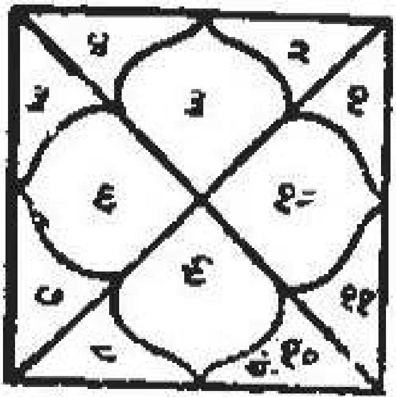

३४३

आठवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व के पक्ष में परेशानी रहती है तथा धन एवं कुटुम्ब के सुख में भी बाधा आती है। दैनिक जीवन में भी परेशानियाँ रहती हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले द्वितीयभाव को देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब की उन्नति के साधन प्राप्त होते रहते हैं तथा उनकी प्राप्ति के लिए विशेष परिश्रम भी करना पड़ता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मिथुनलग्न : नवमभाव : चन्द्र

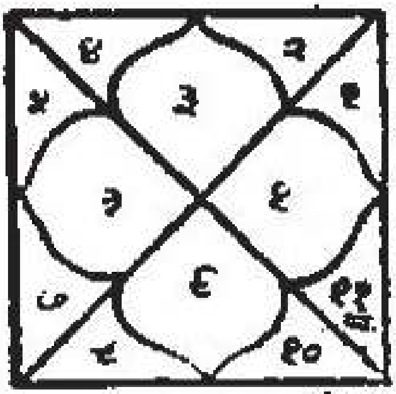

३४४

नवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक धन की वृद्धि के लिए धर्म का पालन करता है तथा भाग्य-पक्ष में कुछ असन्तोष के साथ लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण जातक को भाई-बहिनों का सुख प्राप्त होता है तथा उसके पराक्रम में भी वृद्धि होती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मिथुनलग्न : दशमभाव : चन्द्र

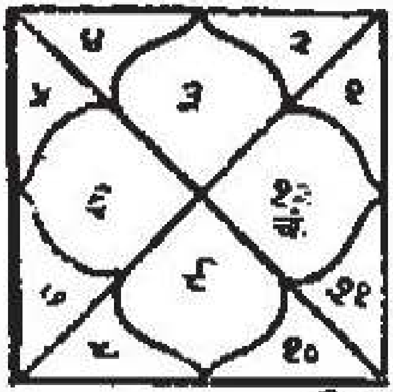

३४५

दसवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को पिता तथा राज्य द्वारा सहयोग, सुख, धन एवं प्रतिष्ठा आदि का लाभ होता है तथा व्यवसाय की उन्नति होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण जातक को माता, भूमि, भवन एवं घरेलू-सुखों का भी लाभ होता है, परन्तु धन की उन्नति में कुछ अटकाव सा अनुभव होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मिथुनलग्न : एकादशभाव : चन्द्र

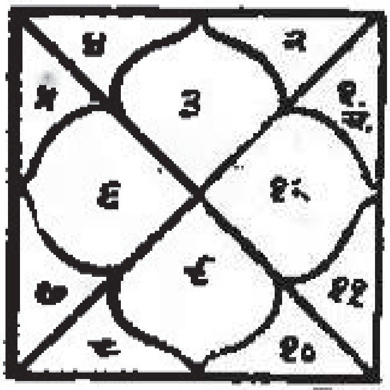

३४९

ग्यारहवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित चन्द्रमा से जातक को धन का पर्याप्त लाभ होता है तथा कौटुम्बिक सुख भी मिलता है।

सातवीं सामान्य मित्रदृष्टि से पचमभाव को देखने के कारण विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में भी पर्याप्त सफलता मिलती है।

ऐसा व्यक्ति विद्वान्, बुद्धिमान्, सन्ततिवान् धनी, सुखी तथा यशस्वी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मिथुनलग्न : द्वादशभाव : चन्द्र

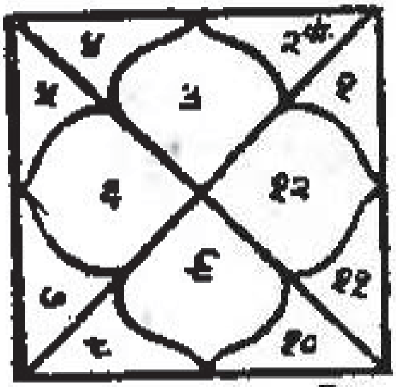

३५०

बारहवें भाव में उच्चस्थ चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता रहता है। कुटुम्ब की शक्ति में कुछ कमी आती है।

सातवीं नीचदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण जातक को शत्रुपक्ष में स्वयं झुक कर अपना काम निकालना पड़ता है तथा रोग, झगड़े आदि के कारण मन में थोड़ी-बहुत अशान्ति भी बनी रहती है।

'मिथुन' लग्न में 'मंगल'

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मिथुनलग्न : प्रथमभाव : मंगल

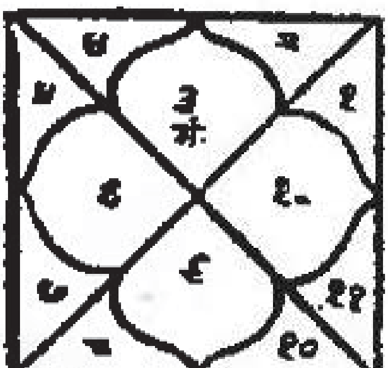

३५०

पहले भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक अपने शारीरिक श्रम द्वारा यथेष्ट धन कमाता है तथा शत्रुपक्ष में भी विजयी होता है चौथी मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता तथा घरेलू सुख का असन्तोषपूर्ण लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री को रोग तथा परेशानियां रहती हैं, परिश्रम द्वारा व्यवसाय से लाभ होता है। सातवीं उच्चदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्व का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति क्रोधी तथा झगड़ालू होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मिथुनलग्न : द्वितीयभाव : मंगल

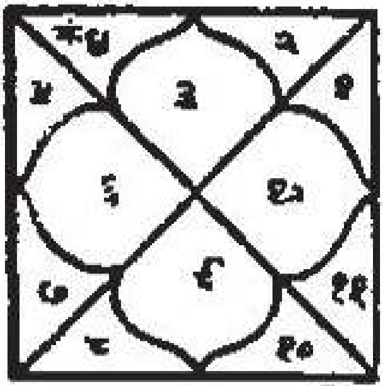

३४९

दूसरे भाव में मित्र चन्द्रमा की राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब की हानि उठानी पड़ती है। शत्रुपक्ष भी नुकसान पहुँचाता है। जुए-सट्टे में भी हानि होती है। चौथी दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान पक्ष में कमी रहती है तथा विद्या-बुद्धि का लाभ भी गुप्त युक्तियों से होता है।

सातवीं उच्च दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। आठवीं शत्रु-दृष्टि से नवमभाव को देखने से धर्म में रुचि नहीं होती तथा भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ आती हैं।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली से 'तृतीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मिथुनलग्न : तृतीयभाव : मंगल

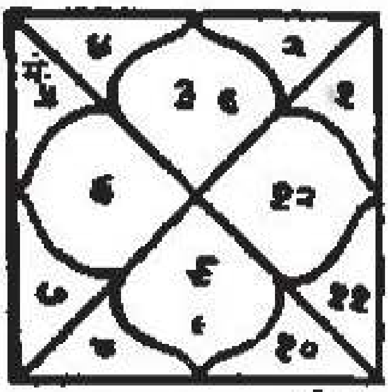

३५०

तीसरे भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन का सुख कुछ परेशानी के साथ मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। चौथी दृष्टि से स्वराशि वाले षष्ठभाव को देखने से शत्रुपक्ष पर विजय मिलती है तथा शत्रुओं से लाभ होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म का सामान्य लाभ होता है। आठवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण राज्य तथा पिता के पक्ष से यश, धन आदि का लाभ होता है तथा प्रभाव में वृद्धि होती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मिथुनलग्न : चतुर्थभाव : मंगल

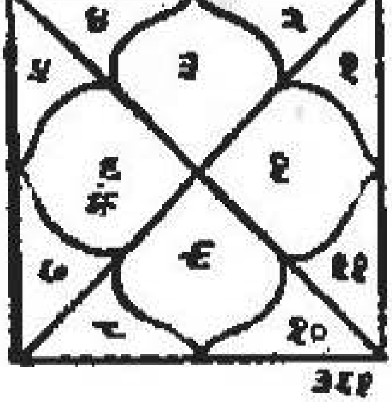

३५१

चौथे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को माता से सामान्य वैमनस्ययुक्त लाभ होता है तथा भूमि, भवन एवं घरेलू सुख भी कुछ कठिनाइयों के साथ ही मिलता है। चौथी मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में सामान्य परेशानियाँ रहती हैं। सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता एवं राज्य द्वारा यश एवं लाभ मिलता है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि के एकादशभाव को देखने से जातक की आमदनी अच्छी रहती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मिथुनलग्न : पंचमभाव : मंगल

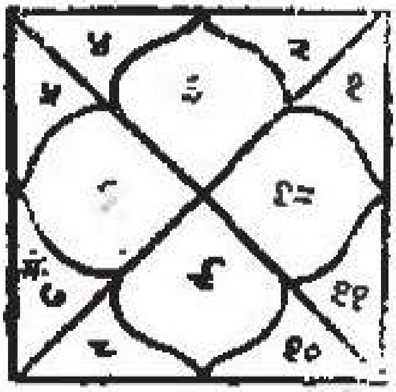

३२२

पाँचवें भाव में सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष द्वारा कुछ वैमनस्य के साथ लाभ होता है तथा परिश्रम द्वारा विद्या-बुद्धि प्राप्त होती है। चौथी उच्चदृष्टि से आयु-वृद्धि तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले एकादशभाव को देखने से गुप्त युक्तियों एवं परिश्रम द्वारा पर्याप्त लाभ होता है। आठवीं दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मिथुनलग्न : षष्ठभाव : मंगल

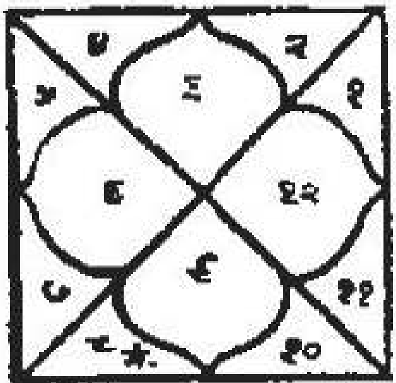

३२३

छठे भाव में स्वराशि-स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को शत्रुपक्ष पर विशेष सफलता मिलती है और शत्रु, झगड़े-टंटे तथा मामा के द्वारा लाभ होता है। चौथी शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने से धर्म तथा भाग्य के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण जातक शारीरिक परिश्रम खूब करता है तथा उसी से धन भी कमाता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'सप्तम भाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मिथुनलग्न : सप्तमभाव : मंगल

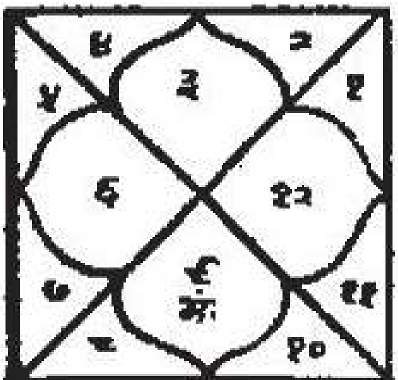

३२४

सातवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को व्यावसायिक तथा स्त्री-पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। चौथी मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ पिता तथा राज्यपक्ष से लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक शक्ति में वृद्धि होती है, परन्तु रक्त-विकार आदि रोग भी हो सकते हैं। आठवीं नीचदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन-संचय में कमी रहती है तथा कुटुम्ब के कारण क्लेश भी मिलता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मिथुनलग्न : अष्टमभाव : मंगल

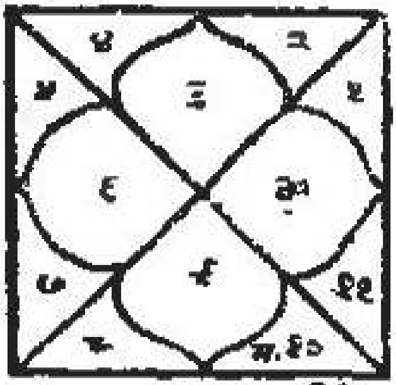

३६५

आठवें भाव में शत्रु शनि की राशि में उच्चस्थ मंगल के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा शत्रुपक्ष पर कुछ कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है। चौथी दृष्टि से स्वराशि वाले एकादश भाव को देखने से परिश्रम द्वारा लाभ होता है। सातवीं नीचदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन-संचय तथा कौटुम्बिक सुख में कुछ कमी रहती है। आठवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मिथुनलग्न : नवमभाव : मंगल

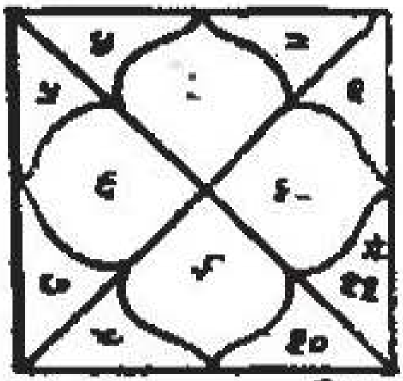

३६६

नवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव के जातक की भाग्योन्नति में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं तथा धर्म-पालन में भी विशेष रुचि नहीं होती। शत्रुपक्ष में कुछ कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है। चौथी दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च की अधिकता तथा बाह्य स्थानों से लाभ होता है। सातवी मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम म वृद्धि होती है। आठवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि, भवन तथा घरेलू सुख भी कुछ कठिनाइयों के बाद पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मिथुनलग्न : दशमभाव : मंगल

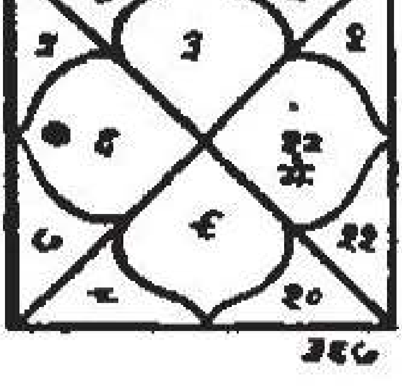

३६७

दसवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक अपने परिश्रम द्वारा राज्य तथा पिता के क्षेत्र में यश और लाभ कमाता है तथा शत्रुपक्ष पर अपना विशेष प्रभाव बनाये रखता है। चौथी मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से शारीरिक शक्ति में वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि द्वारा चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा घरेलू सुख में कुछ कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है। आठवीं मित्र-दृष्टि से सन्तान-पक्ष द्वारा वैमनस्ययुक्त लाभ होता है तथा विद्या के क्षेत्र में सफलता मिलती है। इसकी आमदनी बहुत अच्छी रहती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'मंगल'- का फलादेश

मिथुनलग्न : एकादशभाव : मंगल

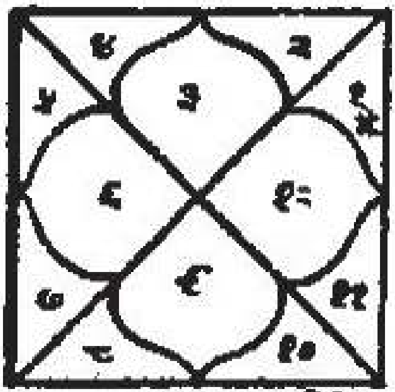

३६८

ग्यारहवें भाव में स्वराशि-स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धन का स्थायी लाभ होता है। चौथी नीचदृष्टि द्वारा द्वितीयभाव को देखने से धन का संचय नहीं होता तथा कौटुम्बिक मामलों में भी कष्ट होता है।

सातवीं दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष द्वारा त्रुटिपूर्ण लाभ होता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। आठवीं दृष्टि से स्वराशि वाले षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष पर जातक का प्रभाव बना रहता है तथा उनसे लाभ भी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मिथुनलग्न : द्वादशभाव : मंगल

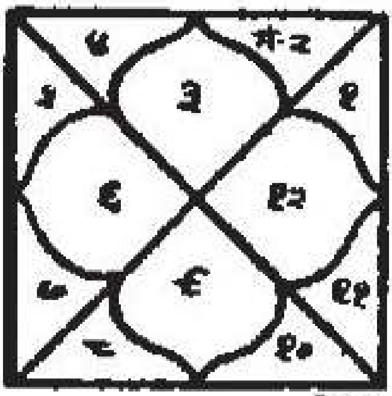

३६९

बारहवें भाव में सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। चौथी मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों से द्वारा भी कुछ परेशानियों के बाद लाभ होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले षष्ठ-भाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष से कभी हानि होती है और कभी लाभ होता है तथा माता का पक्ष कमजोर रहता है। आठवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री से कुछ परेशानी रहती है तथा जननेन्द्रिय सम्बन्धी कोई रोग भी हो सकता है।

'मिथुन' लग्न में 'बुध'

'मिथुन' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मिथुनलग्न : प्रथमभाव : बुध

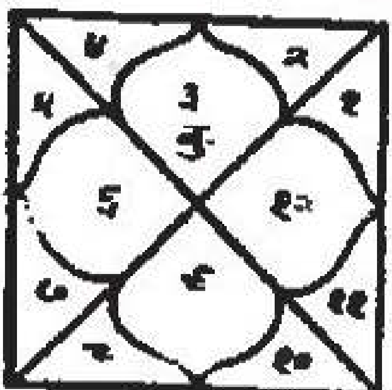

३७०

पहले भाव में स्वराशि में स्थित बुध के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। माता, भूमि, भवन तथा घरेलू सुख भी पर्याप्त परिमाण में उपलब्ध रहता है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से विशेष सुख मिलता है तथा व्यावसायिक क्षेत्र में भी सफलता मिलती है।

ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, शान्त, बुद्धिमान् तथा प्रत्येक क्षेत्र में सफलता पाने वाला होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मिथुन लग्न : द्वितीयभाव : बुध

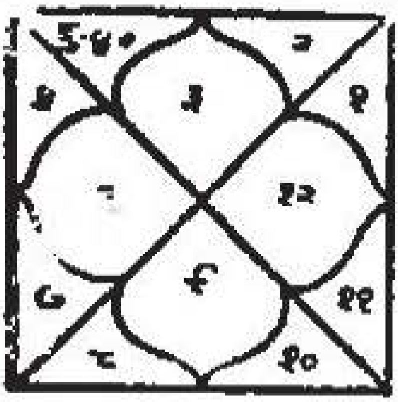

३०१

दूसरे भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि में स्थित बुध के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का सुख तो प्राप्त होता है, परन्तु शारीरिक एवं माता के सुख में कमी रहती है। भूमि, भवन तथा सम्पत्ति का सुख अच्छा मिलता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मिथुन लग्न : तृतीयभाव : बुध

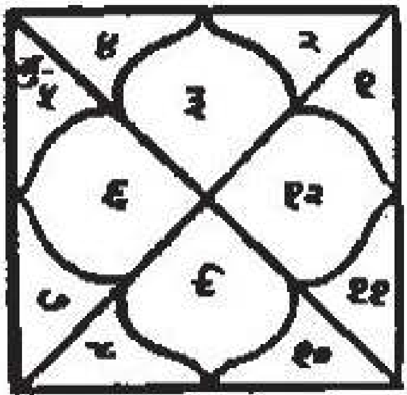

३०२

तीसरे भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। माता, भूमि एवं भवन का भी अच्छा सुख रहता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण जातक अपने पुरुषार्थ द्वारा भाग्य एवं धर्म की उन्नति करता है। ऐसा जातक स्वभावतः सज्जन, धैर्यवान् तथा यशस्वी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मिथुन लग्न : चतुर्थभाव : बुध

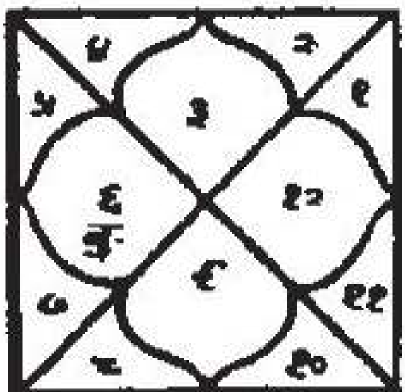

३०३

चौथे भाव में स्वराशि में स्थित बुध के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, भवन तथा सम्पत्ति का पर्याप्त सुख मिलता है। शारीरिक सौन्दर्य एवं मनोविनोद के साधन भी अच्छे मिलते हैं।

सातवीं नीचदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कमियाँ बनी रहती हैं तथा घरेलू सुखों में भी लापरवाही-सी रहती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मिथुन लग्न : पंचमभाव : बुध

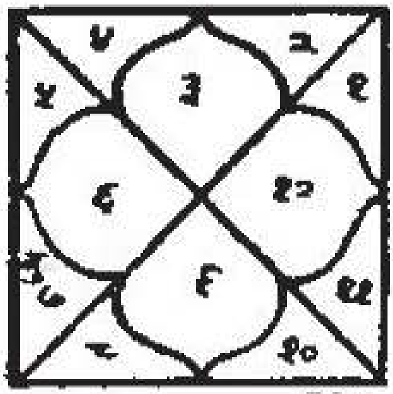

३६५

पाँचवें भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि एवं सन्तान का श्रेष्ठ लाभ होता है और वह बड़ा गंभीर, चतुर तथा आत्मविश्वासी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण बुद्धि-बल से पर्याप्त लाभ होता रहता है। साथ ही माता, भूमि एवं भवन का सुख भी प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति शान्ति-प्रिय स्वभाव का होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मिथुन लग्न : षष्ठभाव : बुध

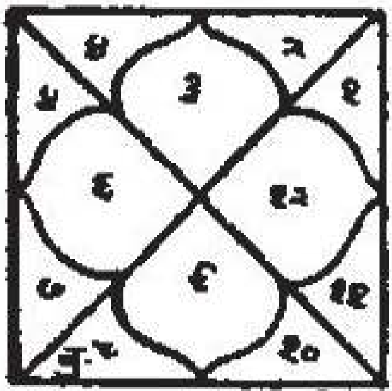

३६६

छठे भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपनी विवेक-शक्ति द्वारा शत्रु-पक्ष में सफलता प्राप्त करता है तथा परिश्रमी होता है। माता, भूमि, घरेलू सुख तथा शारीरिक सौन्दर्य में कमी रहती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से सुख मिलता है। परन्तु झगड़े-झंझटों के कारण कुछ कष्ट भी उठाना पड़ता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मिथुन लग्न : सप्तमभाव : बुध

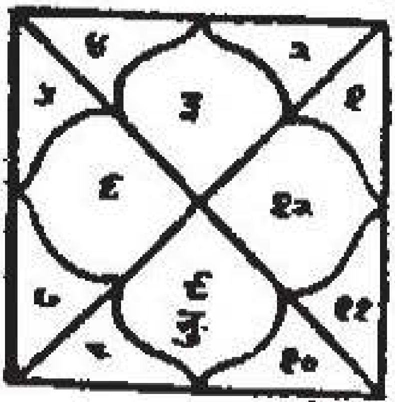

३६७

सातवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष, दैनिक जीवन एवं व्यवसाय में सफलता मिलती है। माता के पक्ष में कुछ कमी रहती है तथा भूमि, भवन का सुख अच्छा प्राप्त होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, चातुर्य, सुख एवं यश की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति अत्यन्त स्वाभिमानी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मिथुन लग्न : अष्टमभाव : बुध

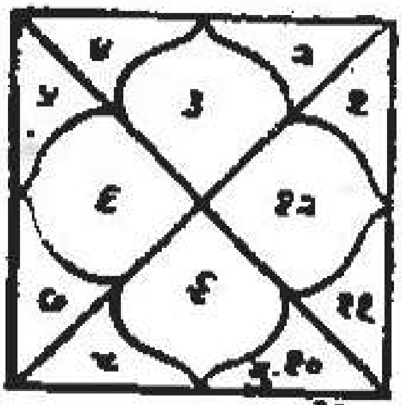

३७७

आठवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है, पर माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है। शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य की भी हानि होती है। ऐसे व्यक्ति को अपने जन्म-स्थान से हट कर परदेश में जाकर रहना पड़ता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण प्रयत्नपूर्वक धन एवं कुटुम्ब के सुख का लाभ होता है, परन्तु शारीरिक सुख में कमी रहती है तथा परेशानियाँ भी उठानी पड़ती हैं।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मिथुन लग्न : नवमभाव : बुध

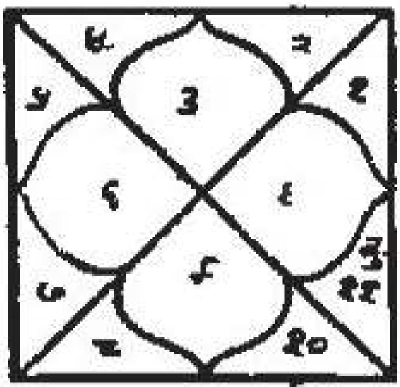

३७८

नवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपने शारीरिक परिश्रम तथा विवेक द्वारा कर्म एवं भाग्य की उन्नति करता है। उसे माता, भूमि तथा भवन का सुख भी प्राप्त होता है।

सातवीं मित्र दृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन का अच्छा सुख भी मिलता है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, यशस्वी, सन्तुष्ट तथा विवेकी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मिथुन लग्न : दशमभाव : बुध

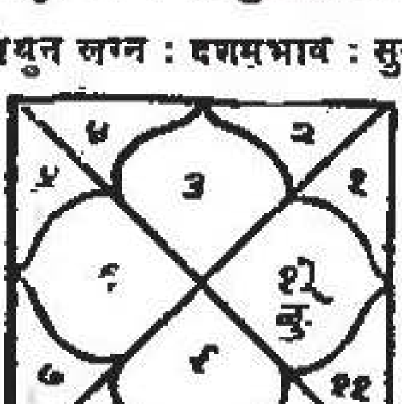

३७९

दसवें भाव में स्थित नीच के बुध के प्रभाव से जातक को अपनी उन्नति के लिए कठोर शारीरिक श्रम करना पड़ता है। पिता का अल्प-सुख मिलता है तथा राज्य के क्षेत्र में भी अधिक सफलता नहीं मिलती।

सातवीं उच्चदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक स्वास्थ्य और सुख के सातवीं में वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति कभी अपमानित और कभी सम्मानित होता रहता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मिथुन लग्न : एकादशभाव : बुध

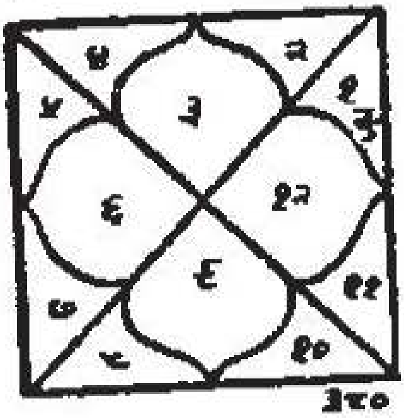

३८०

ग्यारहवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित बुध से प्रभाव से जातक स्व-विवेक एवं शारीरिक परिश्रम द्वारा पर्याप्त लाभ उठाता है। उसे माता, भूमि तथा भवन का सुख भी मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा सन्तान-पक्ष से लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति सुखी, सुन्दर, मधुर-भाषी, धनी तथा विवेकी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

बारहवें भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। माता, भूमि तथा मकान के सुख में भी कमी रहती है। जातक को अपनी जन्म-भूमि से दूर रहने पर लाभ एवं सुख मिलता है।

मिथुन लग्न : द्वादशभाव : बुध

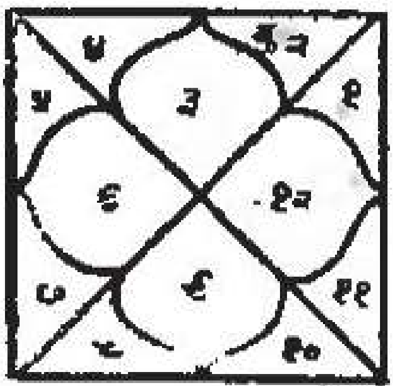

३८१

सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष में विवेक एवं शांति द्वारा सफलता मिलती है। खर्च के कारण भीतरी चिंताएँ रहते हुए भी वह अपने ऊपरी प्रभाव को बनाये रखता है।

'मिथुन' लग्न में 'गुरु'

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

पहले भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को सुख, शारीरिक सौन्दर्य, स्वाभिमान तथा मनोबल की प्राप्ति होती है। पिता तथा राज्य से भी लाभ होता है।

मिथुन लग्न : प्रथमभाव : गुरु

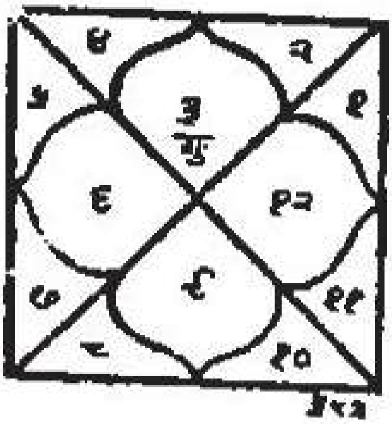

३८२

पाँचवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है, परन्तु सन्तान-पक्ष में कुछ कमी रहती है। सातवीं दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री का सुख अच्छा रहता है तथा नवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

दूसरे भाव में मित्र चन्द्रमा की राशि पर स्थित उच्च के गुरु के प्रभाव से जातक के धन-कुटुम्ब की वृद्धि होती है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव एवं विजय की प्राप्ति होती है।

मिथुन लग्न : द्वितीयभाव : गुरु

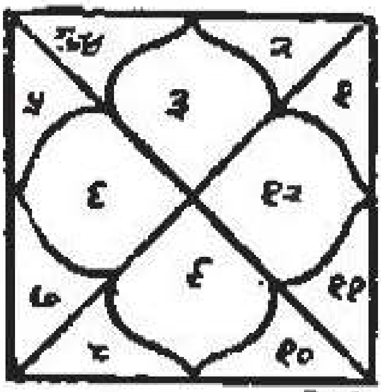

३८३

सातवीं नीचदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व के लाभ में कमी रहती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि वाले दशमभाव को देखने से पिता एवं राज्य के द्वारा सहयोग तथा सफलताएँ मिलती हैं तथा व्यवसाय द्वारा धन की पर्याप्त वृद्धि होती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

तीसरे भाव में सूर्य की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के पराक्रम एवं भाई-बहिनों के सुख में वृद्धि होती है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि के सप्तमभाव को देखने से श्रेष्ठ पत्नी द्वारा सुख प्राप्त होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है।

मिथुन लग्न : तृतीयभाव : गुरु

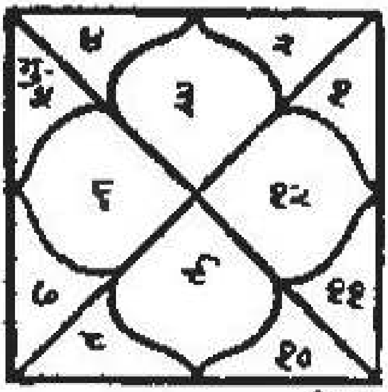

३८५

सातवीं दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कुछ असन्तोष रहता है तथा धन-प्राप्ति के लिए परिश्रम अधिक करना पड़ता है, परन्तु नवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी अच्छी रहती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

चौथे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन आदि का सुख पर्याप्त मिलता है। पाँचवीं नीचदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में अशांति तथा कुछ कमी रहती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले दशमभाव को देखने से पिता तथा राज्य-पक्ष से सहयोग, यश एवं लाभ प्राप्त होता है नवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ लाभ भी होता है।

मिथुन लग्न : चतुर्थभाव : गुरु

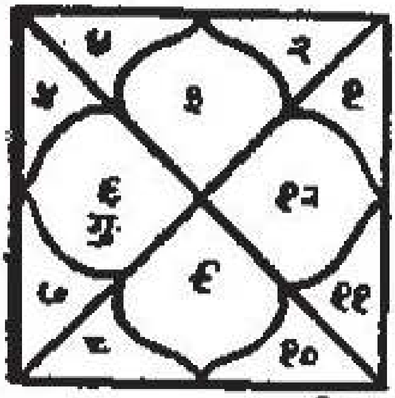

३८४

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

पाँचवें भाव में शत्रु शुक्र की राशिपर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है परन्तु सन्तान-पक्ष में कुछ कमजोरी रहती है। पाँचवीं शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण भाग्योन्नति कुछ कठिनाइयों के साथ होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है तथा नवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण जातक को श्रेष्ठ शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव एवं स्वाभिमान की प्राप्ति होती है।

मिथुन लग्न : पंचमभाव : गुरु

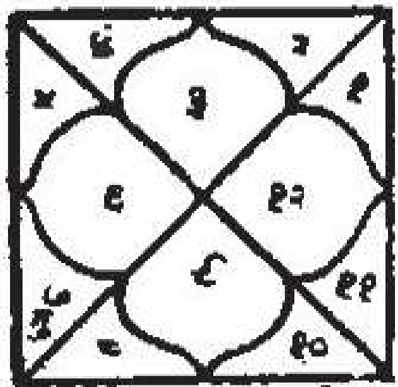

३८६

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

छठे भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष में विजय प्राप्त होती है परन्तु स्त्री-पक्ष से कुछ मतभेद रहता है।

मिथुन लग्न : षष्ठभाव : गुरु

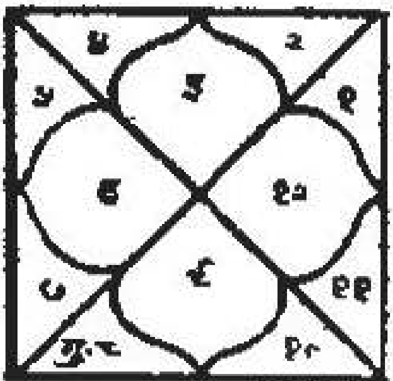

३८७

पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि वाले दशमभाव को देखने से राज्य द्वारा सम्मान तथा उन्नति के अवसर मिलते हैं, परन्तु पिता से कुछ मतभेद रहता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। नवीं उच्च दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से परिश्रम द्वारा धन की वृद्धि होती है तथा कुटुम्ब से भी सहयोग मिलता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

सातवें भाव में स्वराशि-स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में पर्याप्त सफलता मिलती है। पिता तथा राज्य के क्षेत्र से भी सहयोग तथा सम्मान मिलता है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी खूब रहती है। सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य तथा प्रभाव की प्राप्ति होती है। नवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख मिलता है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी तथा संपन्न होता है।

मिथुन लग्न : सप्तमभाव : गुरु

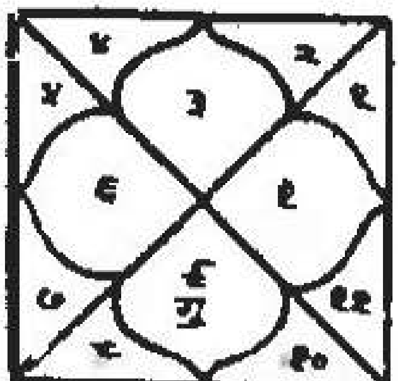

३८८

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

आठवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्व के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। पिता, राज्य, व्यवसाय तथा स्त्री-पक्ष से भी कष्ट होता है। पाँचवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से कपटपूर्ण सम्बन्ध द्वारा काम चलता है। सातवीं उच्चदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से परिश्रम के द्वारा धन की कुछ वृद्धि होती है। नवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन आदि का सामान्य सुख प्राप्त होता है।

मिथुन लग्न : अष्टमभाव : गुरु

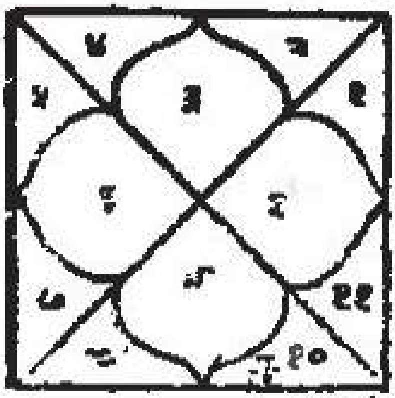

३२९

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

नवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक कुछ कठिनाइयों के साथ भाग्य तथा धर्म की उन्नति करता है। पिता, राज्य तथा स्त्री-पक्ष से असंतोष रहता है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य एव प्रभाव की प्राप्ति होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम तथा भाई-बहिनों का सुख बढ़ता है। नवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है, परन्तु सन्तान-पक्ष से असन्तोष रहता है।

मिथुन लग्न : नवमभाव : गुरु

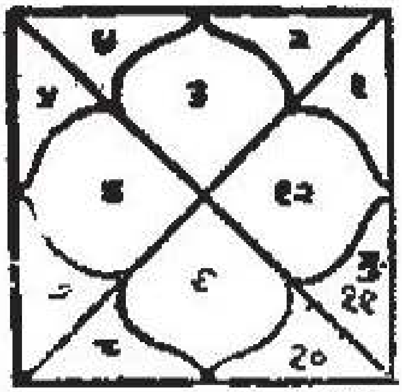

३३०

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

दसवें भाव में स्वराशि स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को राज्य एवं पिता से पूर्ण सहयोग, सुख तथा सम्मान मिलता है। व्यवसाय में भी सफलता मिलती है। पाँचवीं उच्चदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन का संचय को अच्छा होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि, भवन तथा सम्पत्ति का सुख भी खूब मिलता है। नवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है। ऐसा व्यक्ति हर प्रकार से सुखी रहता है।

मिथुन लग्न : दशमभाव : गुरु

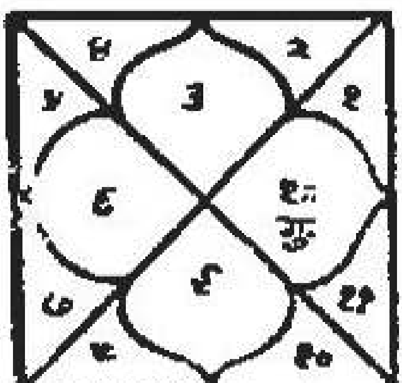

३३१

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

ग्यारहवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को श्रेष्ठ लाभ होता है तथा पिता, व्यवसाय एवं राज्य से भी सहयोग मिलता है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम तथा भाई-बहिनों के सुख में वृद्धि होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या-बुद्धि में तो वृद्धि होती है परन्तु सन्तान-पक्ष कमजोर रहता है। नवीं दृष्टि से स्वराशि के सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष से पर्याप्त लाभ एवं सुख मिलता है।

मिथुन लग्न : एकादशभाव : गुरु

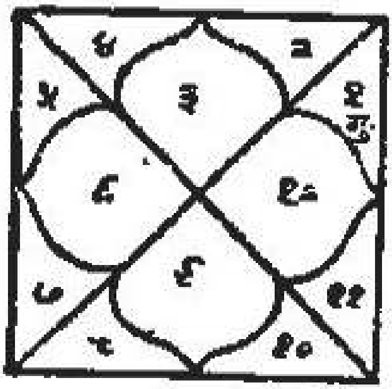

३८३

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

बारहवें भाव में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से यश तथा लाभ मिलता है। स्त्री तथा पिता के सुख में कुछ कमी रहती है तथा व्यवसाय में भी हानि होती है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि, भवन तथा घरेलू सुख की प्राप्ति होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से शत्रुपक्ष में सफलता मिलती है। नवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व के विषय में संकटों का सामना करना पड़ता है।

मिथुन लग्न : द्वादशभाव : गुरु

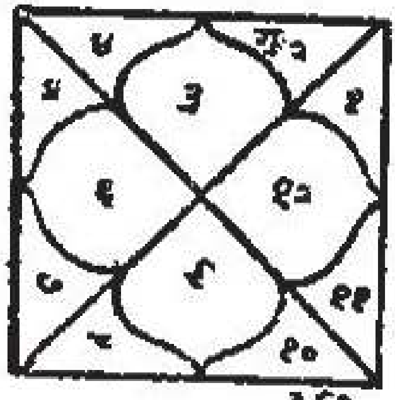

३८४

'मिथुन' लग्न में 'शुक्र'

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

पहले भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक शरीर से दुर्बल परन्तु विद्या, बुद्धि एवं चातुर्य में प्रवीण होता है। वह खर्चीला तथा बाहरी स्थानों से लाभ प्राप्त करने वाला होता है।

मिथुन लग्न : प्रथमभाव : शुक्र

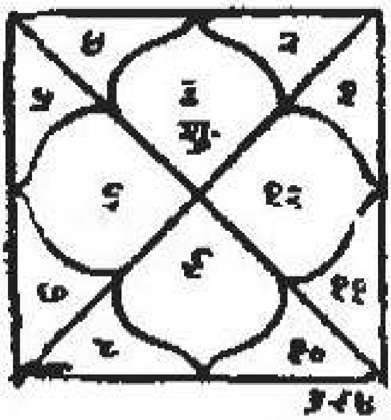

३८५

सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री के साथ मतभेदपूर्ण आसक्ति बनी रहती है। दैनिक कार्यों तथा व्यवसाय में बड़ी युक्ति के साथ सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति बहुत विलासी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मिथुन लग्न : द्वितीयभाव : शुक्र

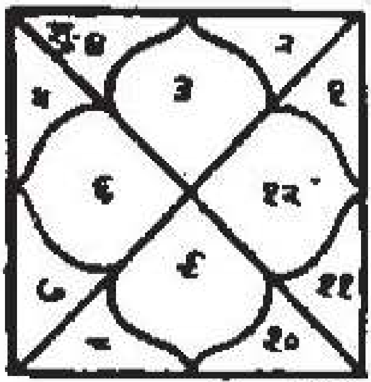

३६४

दूसरे भाव में लघु चन्द्रमा की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक बुद्धि एवं चातुर्य द्वारा धन तथा प्रतिष्ठा तो कमाता है, परन्तु धन का संचय नहीं हो पाता। बाहरी स्थानों से संबंध अच्छा रहता है, परन्तु सन्तान-सुख में कुछ कमी रहती है। विद्या का श्रेष्ठ लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। ऐसी ग्रहस्थिति का व्यक्ति शानदार-जीवन बिताने का आदी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मिथुनलग्न : तृतीयभाव : शुक्र

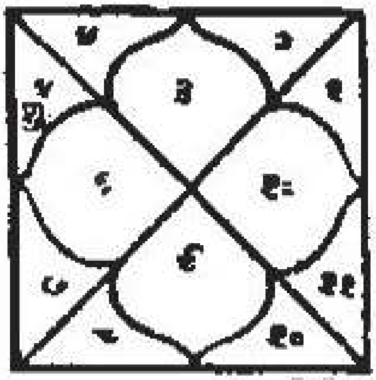

३६५

तीसरे भाव में लघु सूर्य की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के पराक्रम तथा भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी रहती है। विद्या तथा सन्तान-पक्ष में भी न्यूनता रहती है परन्तु बुद्धि-चातुर्य प्रबल होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से जातक धर्म तथा भाग्य की वृद्धि के लिए विशेष प्रयत्न करता है। वह पुरुषार्थ द्वारा अपना खर्च चलाने तथा चातुर्य द्वारा काम निकालने में कुशल होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मिथुनलग्न : चतुर्थभाव : शुक्र

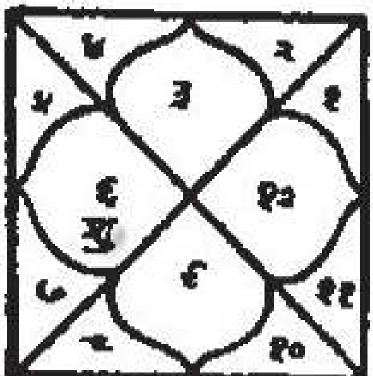

३६६

चौथे भाव में स्थित नीच के शुक्र के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है। सन्तान का सुख भी कम मिलता है। अन्य सुखों में भी व्यवधान आता है।

सातवीं उच्चदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता तथा राज्य के द्वारा सुख-सम्मान तथा सहयोग मिलता है और गुप्त चतुराई के बल पर मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मिथुन लग्न : पंचमभाव : शुक्र

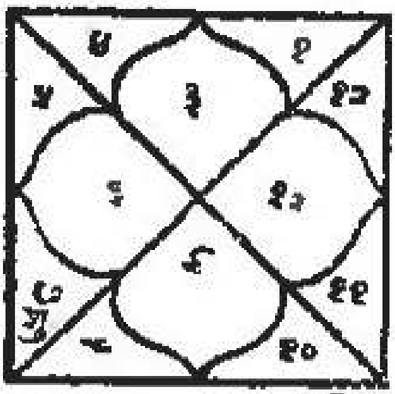

३८८

पाँचवें भाव में स्वराशि-स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में कुछ त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति चतुर होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ उठाता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से बुद्धि द्वारा लाभ अधिक होता है, परन्तु शुक्र के व्ययेश होने के कारण आमदनी से खर्च अधिक रहता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मिथुन लग्न : षष्ठभाव : शुक्र

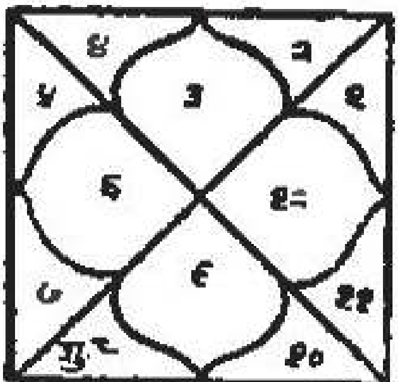

३८९

छठे भाव में सामान्य मित्र मंगल की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में अपनी गुप्त चतुराई एवं खर्च करने की शक्ति से सफलता प्राप्त करता है। सन्तान-पक्ष तथा विद्याध्ययन के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले द्वादश भाव को देखने से खर्च आमदनी से अधिक बना रहता है। ऐसा व्यक्ति झगड़े-टंटे एवं मुकद्मेबाजी में अधिक फँसा रहता है और उसी में उसकी शक्तियाँ व्यय होती रहती हैं।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मिथुन लग्न : सप्तमभाव : शुक्र

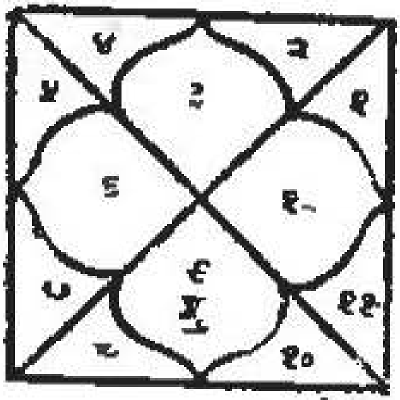

३९०

सातवें भाव में सामान्य मित्र गुरु की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की पत्नी बुद्धिमान् तथा चतुर होती है। परन्तु उसे स्त्री-पक्ष से कष्ट तथा चिन्ताएँ भी प्राप्त होती रहती हैं। दैनिक खर्च चलाने के लिए उसे बुद्धिमानी तथा बड़ी चतुराई से काम लेना पड़ता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शरीर दुर्बल होता है, परन्तु सम्मान की वृद्धि होती है। ऐसे व्यक्ति की विद्या, बुद्धि, सन्तान तथा बाहरी सम्बन्धों के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मिथुन लग्न : अष्टमभाव : शुक्र

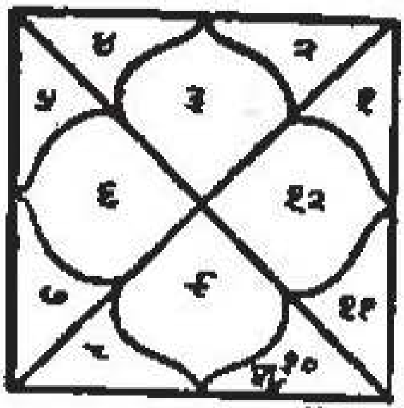

४०१

आठवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है। वह कूट-नीतिज्ञ तथा परिश्रमी होता है। उसे सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण जातक को धन-वृद्धि के लिए विशेष प्रयत्न करने पड़ते हैं, तथा शुक्र के व्ययेश होने के कारण खर्च अधिक बना रहता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मिथुन लग्न : नवमभाव : शुक्र

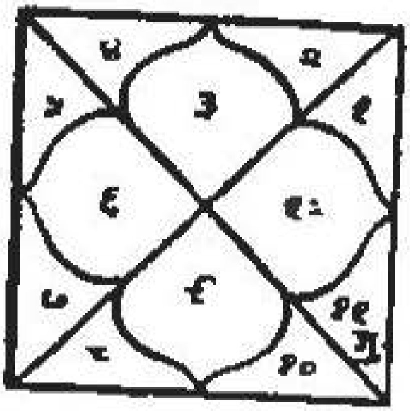

४०२

नवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की कुछ कठिनाइयों के साथ उन्नति होती है। विद्या तथा सन्तान का सुख भी प्राप्त होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों के साथ वैमनस्य रहता है तथा पराक्रम में भी कुछ कमी आती है। ऐसा व्यक्ति भाग्य को पुरुषार्थ से बड़ा मानने वाला होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मिथुन लग्न : दशमभाव : शुक्र

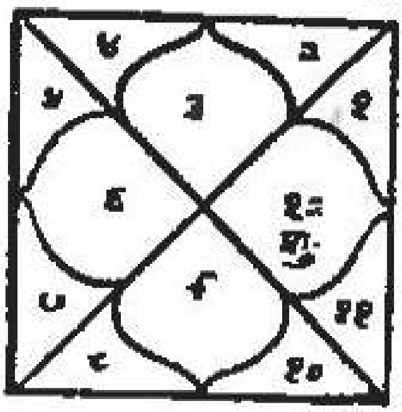

४०३

दसवें भाव में सामान्य मित्र गुरु की राशि पर स्थित व्ययेश उच्च के शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में बड़ी हानि उठानी पड़ती है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। पिता, राज्य, विद्या तथा सन्तान की शक्ति भी प्राप्त होती है।

चौथी नीचदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन के सुख में कमी आती है। ऐसा व्यक्ति अपने अहंकारी स्वभाव के कारण बार-बार हानि उठाता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मिथुन लग्न : एकादशभाव : शुक्र

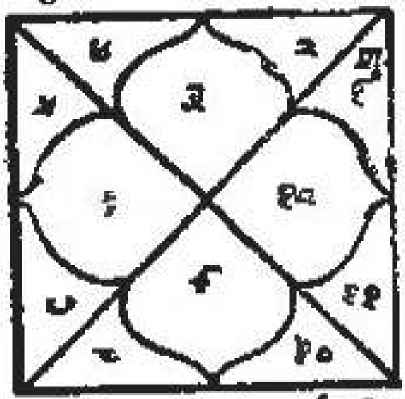

४०४

ग्यारहवें भाव में सामान्य मित्र मंगल की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है परन्तु खर्च भी खूब होता रहता है। मस्तिष्क में चिन्ताएँ भी बनी रहती हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के पंचमभाव को देखने के कारण कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या-बुद्धि में प्रवीणता प्राप्त होती है तथा सन्तान-पक्ष में भी कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। ऐसे व्यक्ति के मस्तिष्क में चिन्ताएँ बनी रहती हैं।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मिथुन लग्न : द्वादशभाव : शुक्र

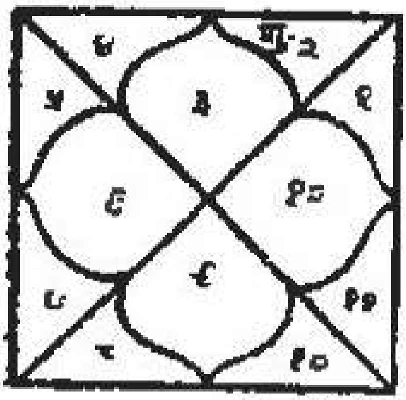

४०५

बारहवें भाव में स्वराशि-स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी होता है। विद्या तथा सन्तान के पक्ष में कुछ परेशानियाँ रहती हैं।

सातवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण जातक शत्रु-पक्ष में चतुराई से प्रभाव स्थापित करके अपना काम निकालता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा चतुर होता है। साथ ही, उसके मस्तिष्क में चिन्ताएँ भी बनी रहती हैं।

'मिथुन' लग्न में 'शनि'

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मिथुन लग्न : प्रथमभाव : शनि

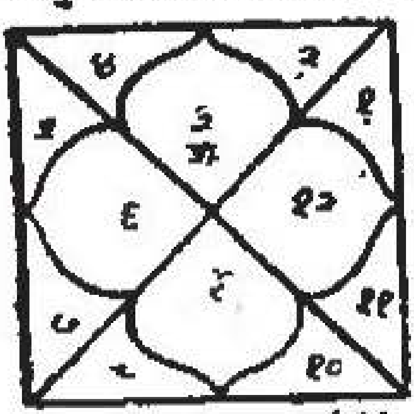

४०६

पहले भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी आती है, परन्तु आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है।

तीसरी शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के वैमनस्य रहता है तथा पराक्रम में कमी आती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में असन्तोष रहता है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता से वैमनस्य रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मिथुन लग्न : द्वितीयभाव : शनि

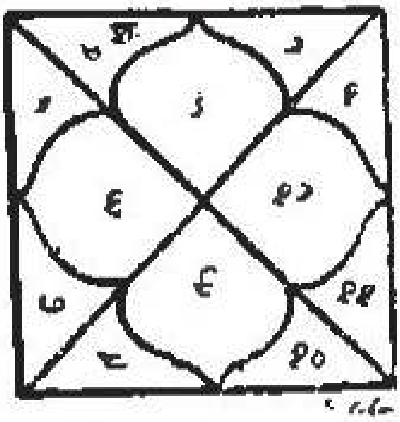

६०४

दूसरे भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को धन-संचय की शक्ति एवं कौटुम्बिक सुख में हानि होती है। तीसरी मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ कष्टों के साथ प्राप्त होता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि के अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। दसवीं नीचदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आय के मार्ग में कठिनाइयाँ आती हैं। ऐसा व्यक्ति समाज में भाग्यवान् समझा जाता है और वह सज्जन होने के साथ ही स्वार्थी भी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मिथुन लग्न : तृतीय भाव : शनि

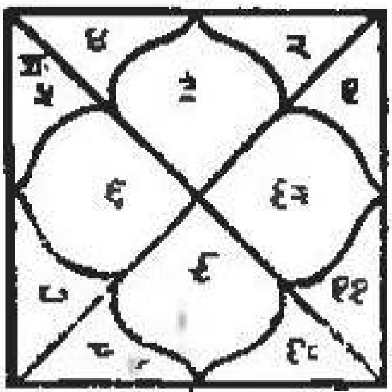

६०५

तीसरे भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के पराक्रम में कुछ कमी आती है तथा भाई-बहिन से वैमनस्य रहता है। साथ ही आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति बढ़ती है। तीसरी उच्चदृष्टि से पचमभाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में उन्नति होती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले नवमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म का पालन भी होता है। दसवीं दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है, परन्तु खर्च अधिक बना रहता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मिथुन लग्न : चतुर्थभाव : शनि

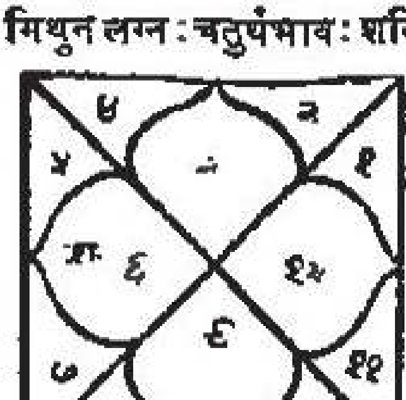

६०६

चौथे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को कुछ कमी के साथ माता का सुख प्राप्त होता है तथा भूमि-भवन के सुख में भी कुछ कमी रहती है। आयु एवं पुरातत्त्व का श्रेष्ठ लाभ होता है तथा धर्म का पालन भी होता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर कड़ाई के साथ प्रभाव स्थापित होता है तथा शत्रुओं एवं झगड़ों से लाभ मिलता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता एवं राज्य-क्षेत्र से असन्तोष तथा वैमनस्य रहता है। दसवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक शक्ति में वृद्धि होती है तथा लोग उसे भाग्यवान् भी समझते हैं।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित शनि का फलादेश

मिथुन लग्न : पंचमभाव : शनि

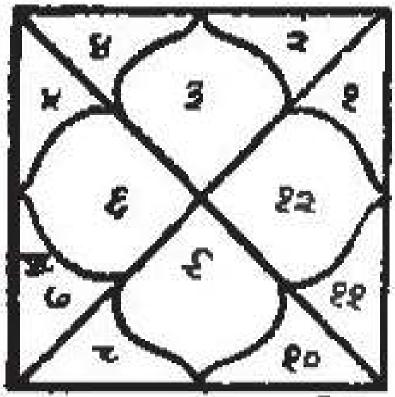

६७०

पाँचवें भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। भाग्य-वृद्धि भी होती है। तीसरी शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। सातवीं नीचदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में कमी आती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से कठिनाइयों के साथ धन-सम्बन्धी आवश्यकताएँ पूरी होती हैं तथा कुटुम्ब से भी कम सुख प्राप्त होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मिथुन लग्न : षष्ठभाव : शनि

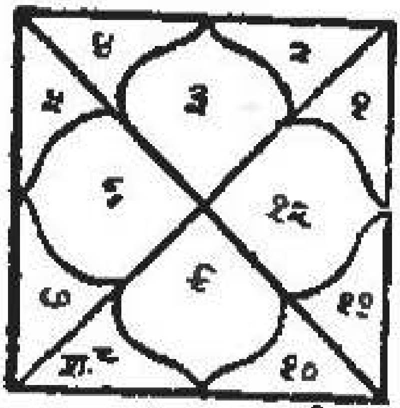

६७१

छठे भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को शत्रु तथा झगड़ों के क्षेत्र में सफलता एवं विजय मिलती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि वाले अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में लाभ होता है तथा ठाठ-बाट में बहुत खर्च होता है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम में कमी आती है तथा भाई-बहिन के सुख में बाधा पड़ती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा परिश्रमी भी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मिथुन लग्न : सप्तमभाव : शनि

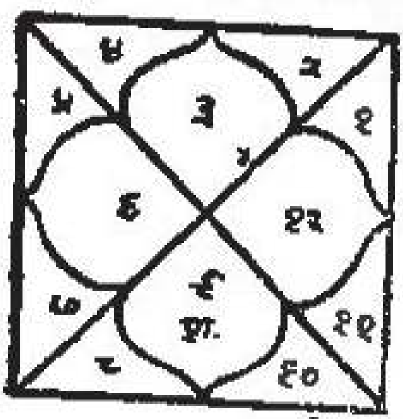

६७२

सातवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख-दुःख तथा हानि-लाभ दोनों की प्राप्ति होती रहती है। जननेन्द्रिय में कष्ट होता है। परन्तु आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि के नवमभाव को देखने से भाग्य की वृद्धि होती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक प्रभाव में कुछ न्यूनता के साथ वृद्धि होती है। दसवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ कठिनाइयों के साथ मिलता है। ऐसा व्यक्ति परिश्रम द्वारा कठिनाइयों पर विजय पाकर तरक्की करता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मिथुन लग्न : अष्टमभाव : शनि

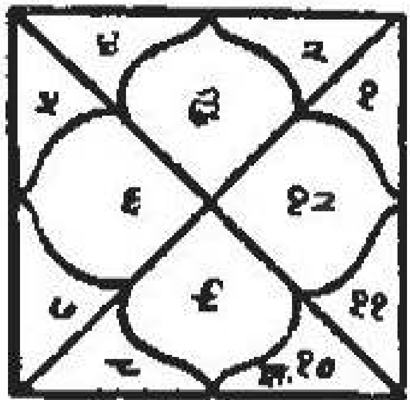

४१३

आठवें भाव में स्वराशि-स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। भाग्य तथा सम्मान के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। धर्म का पालन भी ठीक से नहीं होता। तीसरी शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता एवं राज्य के क्षेत्र में कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय में कमी रहती है। दसवीं उच्च दृष्टि से पंचमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है। ऐसा जातक अपनी वाणी की शक्ति द्वारा भाग्योन्नति करता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मिथुन लग्न : नवमभाव : शनि

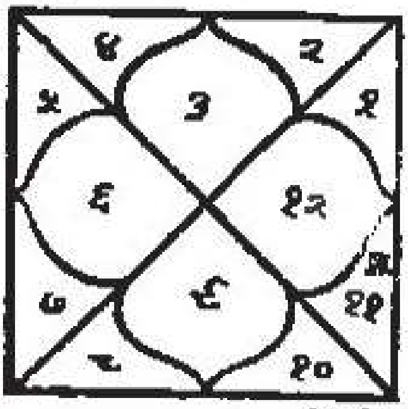

४१४

नवें भाव में स्वराशि-स्थित शनि के प्रभाव से जातक कुछ कमियों के साथ भाग्यवान बना रहता है। उसे आयु तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। धर्म-पालन में रुचि रहती है तथा यश भी मिलता है। तीसरी नीच-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी में कठिनाइयाँ आती हैं। सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में कमी आती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रुपक्ष से होने वाली परेशानियों पर विजय प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति बड़े ठाठ का जीवन व्यतीत करता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मिथुन लग्न : दशमभाव : शनि

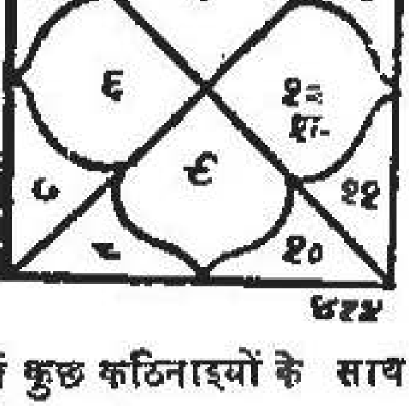

४१५

दसवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को पिता के सुख में कमी रहती है, परन्तु राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। तीसरी मित्र-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से श्रेष्ठ लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है। सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख मिलता है। दसवीं दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। ऐसा जातक संघर्षपूर्ण जीवन बिताता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मिथुनलग्न : एकादशभाव : शनि

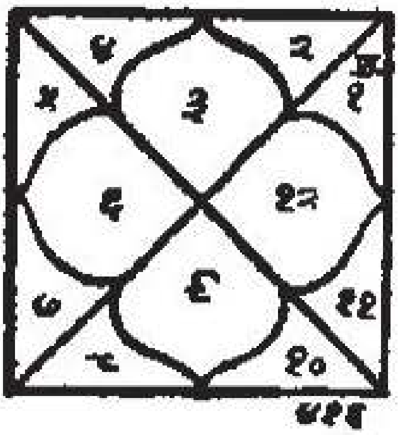

ग्यारहवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आमदनी के मार्ग में परेशानियां आती हैं। भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में की त्रुटियां रहती हैं। वह धन-प्राप्ति के लिए अनुचित मार्ग भी अपनाता है। तीसरी मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शरीर को कुछ कष्ट भी रहता है तथा जातक भाग्यशाली भी बनता है। सातवीं उच्च दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में उन्नति होती है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि वाले अष्टमभाव को देखने के कारण आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। नीच का शनि जातक के जीवन को अनेक संकटों तथा खतरों में डालता रहता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित शनि का फलादेश

मिथुनलग्न : द्वादशभाव : शनि

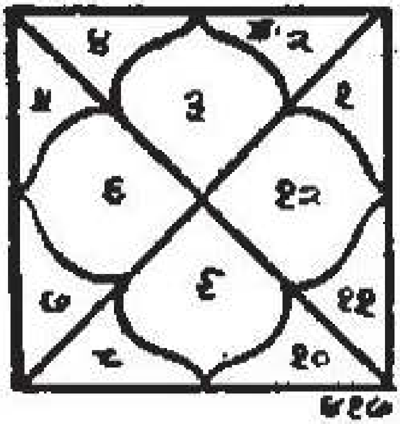

बारहवें भाव में अपने मित्र शुक्र की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन एवं कुटुम्ब-सुख के पक्ष में कमी बनी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रुपक्ष पर कठिनाइयों से बाद विजय मिलती है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि के नवम भाव में देखने से भाग्य की वृद्धि होती है तथा जातक धर्म का पालन भी करता है। ऐसा व्यक्ति यश-अपयश तथा सुख-दुःख दोनों ही प्राप्त करता है, परन्तु भाग्यशाली समझा जाता है।

'मिथुन' लग्न में 'राहु'

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मिथुनलग्न : प्रथमभाव : राहु

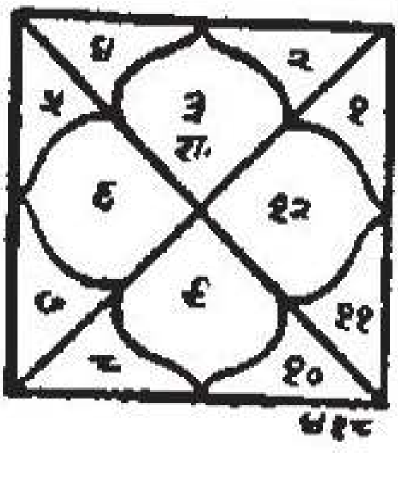

पहले भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक प्रभावशाली, लम्बे शरीर वाला, विवेकी, स्वार्थी, गुप्त युक्तियों का ज्ञाता तथा बड़ी हिम्मत वाला होता है। वह कष्टसाध्य कर्मों तथा गुप्त युक्तियों के आश्रय से अपनी उन्नति करता है तथा धन एवं सम्मान पाता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मिथुन लग्न : द्वितीयभाव : राहु

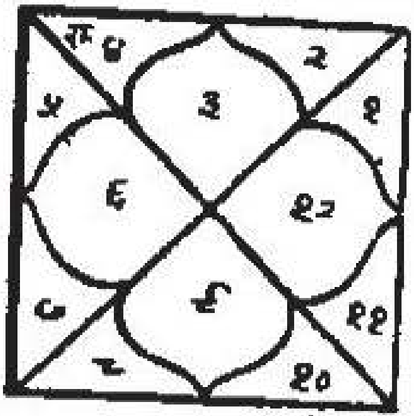

४१९

दूसरे भाव मे शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को धन-सम्पत्ति तथा कौटुम्बिक सुख की बड़ी हानि उठानी पड़ती है। गुप्त युक्तियों तथा कठिन परिश्रम का आश्रय लेने पर भी धन-प्राप्ति के क्षेत्र में सामान्य सफलताएँ ही मिलती हैं। उसे बहुत समय बाद धन का अल्प सुख मिलता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मिथुन लग्न : तृतीयभाव : राहु

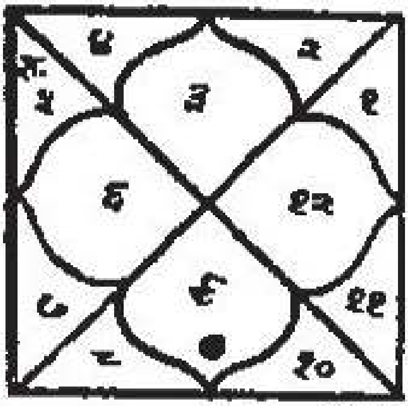

४२०

तीसरे भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कमी आती है। वह अपनी उन्नति के लिए बहुत हिम्मत तथा परिश्रम से लगा रहता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा धैर्यवान्, हिम्मती तथा गुप्त युक्तियों से सम्पन्न होता है। परन्तु कभी-कभी उसे बड़े संकटों का सामना भी करना पड़ता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मिथुन लग्न : चतुर्थभाव : राहु

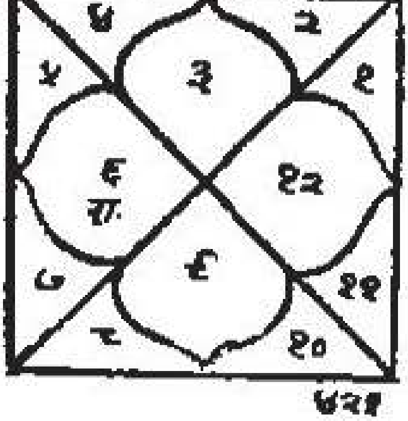

४२१

चौथे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की माता, भूमि, भवन एवं घरेलू सुख में कमी तथा असंतोष की प्राप्ति होती है। वह गुप्त युक्तियों के बल पर सुख-प्राप्ति का प्रयत्न करता है, परन्तु उसकी इच्छी भली-भाँति पूर्ण नहीं हो पाती।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मिथुन लग्न : पंचमभाव : राहु

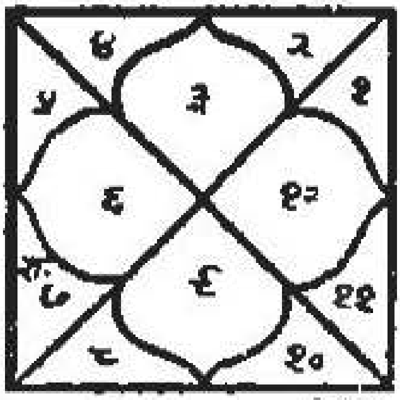

४२२

पाँचवें भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अनेक कठिनाइयों के बाद विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है, परन्तु सन्तान-पक्ष में कष्ट ही बना रहता है।

ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों का ज्ञाता, बुद्धिमान, असत्यवादी, प्रभावोत्पादक तथा अनेक प्रकार की चिंताओं से ग्रस्त होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मिथुन लग्न : षष्ठभाव : राहु

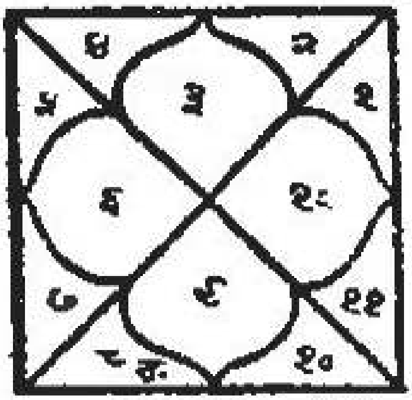

४२३

छठे भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक शत्रु पर अपना विशेष प्रभाव बनाये रखता है तथा उन पर विजय पाता है। ऐसा व्यक्ति अपनी कमजोरियों को प्रकट नहीं होने देता तथा बड़ा साहसी, धैर्यवान, चतुर, पराक्रमी तथा गुप्त युक्तियों का जानकार होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मिथुन लग्न : सप्तमभाव : राहु

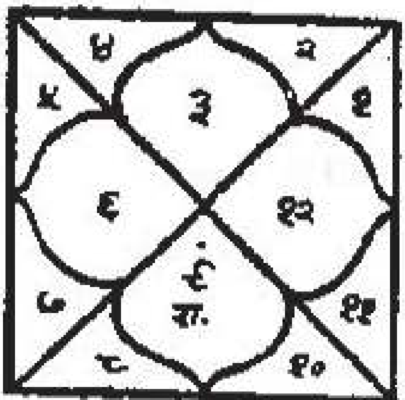

४२४

सातवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की स्त्री को बहुत कष्ट प्राप्त होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी बड़ी कठिनाइयाँ आती रहती हैं।

ऐसे व्यक्ति की मूत्रेन्द्रिय में भी कोई विकार होता है। वह गुप्त युक्तियों तथा असत्य-भाषण आदि के अनुचित तरीकों से भी अपना स्वार्थ-साधन करने से नहीं चूकता

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मिथुन लग्न : अष्टमभाव : राहु

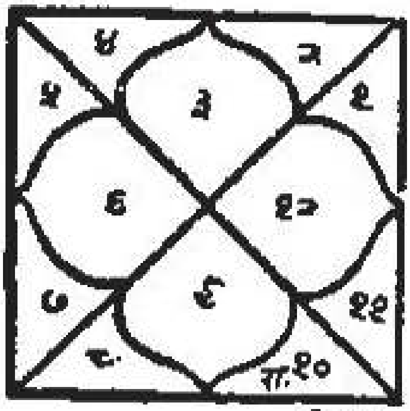

४२४

आठवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को पुरातत्त्व एवं आयु के विषय में अनेक प्रकार के संकटों का सामना करना पड़ता है। उसके पेट के निम्न भाग में कोई विकार भी होता है।

ऐसा व्यक्ति कठिन परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के बल पर सफलता पाने के लिए प्रयत्नशील रहता है तथा अपनी कठिनाइयों के विषय में किसी को पता नहीं चलने देता।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मिथुन लग्न : नवमभाव : राहु

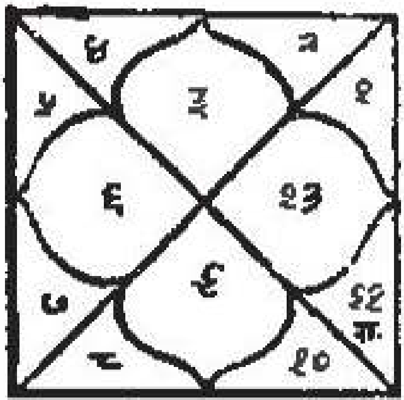

४२५

नवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में अनेक कठिनाइयाँ आती हैं। वह अपने परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के बल पर भाग्य की वृद्धि तो करता है, परन्तु पूर्ण सुख-सम्मान प्राप्त नहीं कर पाता। उसका धर्म-पालन भी ढोंग-जैसा ही होता है। कहीं बहुत बाद में उसे थोड़ी-सी सफलता मिल पाती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मिथुन लग्न : दशमभाव : राहु

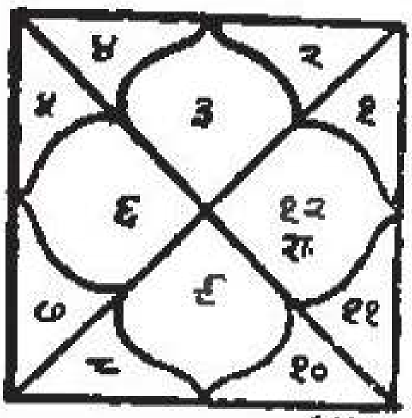

४२६

दसवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा अत्यन्त कठिन परिश्रम के बाद ही थोड़ी-बहुत सफलता मिल पाती है। ऐसे व्यक्ति पर बार-बार संकट आते रहते हैं, अन्त में थोड़ी-सी सफलता भी मिलती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मिथुन लग्न : एकादशभाव : राहु

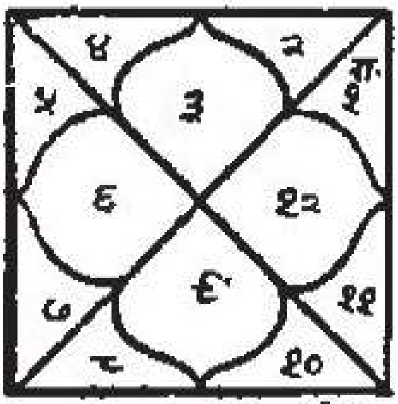

६२८

ग्यारहवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक गुप्त युक्तियों का आश्रय लेकर आमदनी की वृद्धि करता है तथा कठिन परिश्रम द्वारा पर्याप्त धन भी उपार्जित करता है। कभी-कभी उसे घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है परन्तु अन्त में विशेष सफलता भी मिलती है। ऐसा व्यक्ति थोड़े लाभ से सन्तुष्ट रहकर भी विशेष लाभ के लिए नित नई योजनाएँ बनाता रहता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मिथुन लग्न : द्वादशभाव : राहु

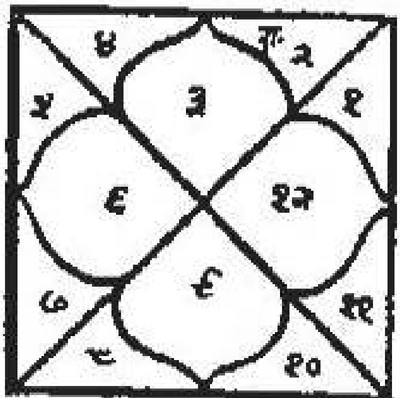

६२९

बारहवें भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है और इसी कारण उसे कभी-कभी बड़ी कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है। उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी होता है।

गुप्त युक्तियों, परिश्रम तथा चातुर्य के बल पर वह अपना खर्च चलाता है तथा बाहरी लोगों की दृष्टि में वह प्रभावशाली बना रहता है।

'मिथुन' लग्न में 'केतु'

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मिथुन लग्न : प्रथमभाव : केतु

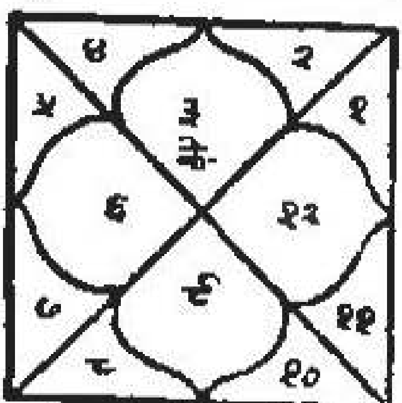

६३०

पहले भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक में शारीरिक सौंदर्य में कमी रहती है। वह गुप्त चिंताओं, रोग, चोट आदि का शिकार बनता रहता है। गुप्त युक्तियों तथा शारीरिक परिश्रम के बल पर वह अपने स्वार्थों की पूर्ति करता है। विवेकी होने पर भी उसमें स्वाभिमान कम होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मिथुन लग्न : द्वितीयभाव : केतु

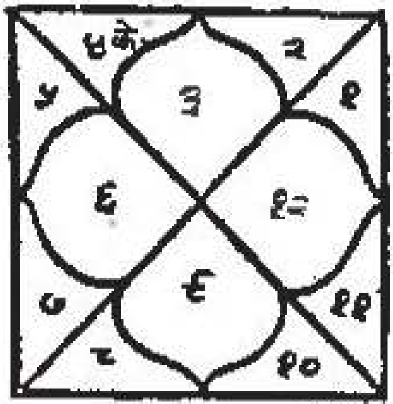

४३१

दूसरे भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक धन तथा कुटुम्ब के बारे में चिन्ता-ग्रस्त बना रहता है। धन-संचय न हो पाने से कभी-कभी अत्यधिक कष्ट पाता है तथा कौटुम्बिक कारणों से मानसिक क्लेश का शिकार भी होता है। वह धैर्य, साहस एवं गुप्त युक्तियों का आश्रय लेकर ही अपनी कठिनाइयों पर थोड़ी-बहुत विजय प्राप्त कर पाता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मिथुन लग्न : तृतीय भाव : केतु

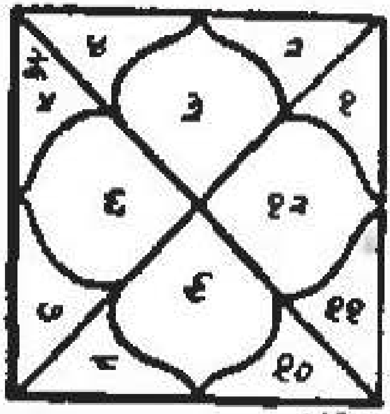

४३२

तीसरे भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में तो अत्यधिक वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कमी आ जाती है। वह अपने पराक्रम-विषयक कारणों से ही परेशानी उठाता है। ऐसा जातक बड़ा दम्भी, हिम्मती, हठी, बहादुर तथा साहसी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मिथुन लग्न : चतुर्थभाव : केतु

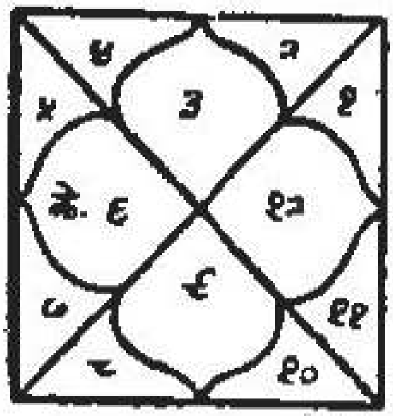

४३३

चौथे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक घरेलू सुखों को पाने के लिए बड़ी चतुराई का आश्रय लेकर सफल होता है। भूमि तथा भवन का सुख भी कुछ कमी के साथ मिलता है। अपने गुप्त साहस एवं धैर्य के बल पर अन्त में उसे सुख-प्राप्ति में सफलता भी मिलती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मिथुन लग्न : पंचमभाव : केतु

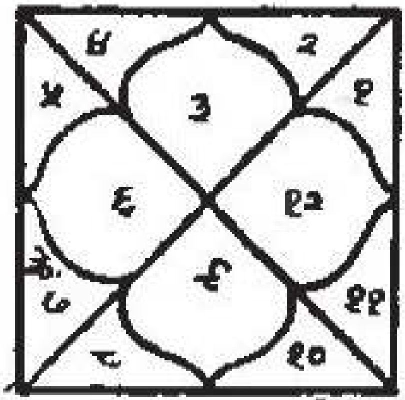

४३७

पाँचवें भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को विद्याध्ययन में कठिनाइयाँ आती हैं तथा सन्तान-पक्ष में भी कठिनाइयों के साथ ही सामान्य सफलता मिलती है।

ऐसा व्यक्ति अपने गुप्त धैर्य की शक्ति, चातुर्य तथा हिम्मत के बल पर ही विद्या के तथा अन्य क्षेत्रों में सफलताएँ प्राप्त करता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मिथुन लग्न : षष्ठभाव : केतु

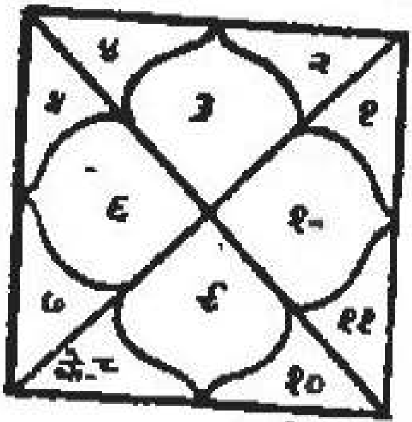

४३८

छठे भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक अपनी गुप्त युक्तियों द्वारा शत्रुओं का दमन करने में समर्थ होता है तथा मुकदमे आदि में सफलताएँ प्राप्त करता है।

ऐसा व्यक्ति अपनी आन्तरिक कमजोरी को छिपाने में कुशल होता है तथा बड़ी हिम्मत से काम लेकर लोगों को आश्चर्य में डाल देता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मिथुन लग्न : सप्तमभाव : केतु

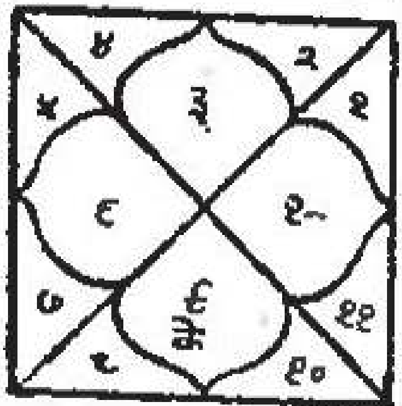

४३९

सातवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के बाद सफलता प्राप्त होती है। उसके जीवन में इन्द्रिय-भोगों की अधिकता रहती है। ऐसा व्यक्ति कठिन परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के बल पर अत्यधिक उन्नति भी कर लेता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मिथुन लग्न : अष्टमभाव : केतु

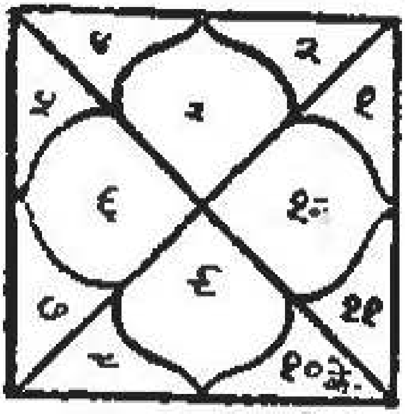

८३७

आठवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की पुरातत्त्व की हानि होती है तथा आयु के सम्बन्ध में भी अनेक बार संकटों का सामना करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति अपनी हिम्मत तथा बहादुरी के बल पर संकट के समय भी धैर्य को नहीं खोता। उसे पेट की कोई बीमारी भी हो सकती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मिथुन लग्न : नवमभाव : केतु

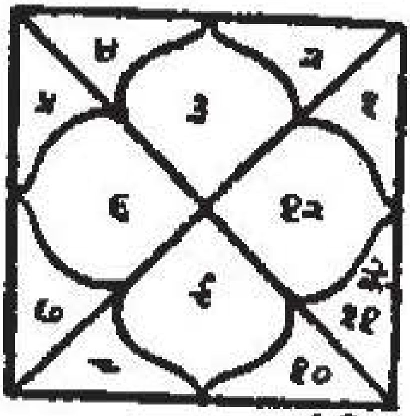

८३८

नवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में कुछ बाधाएँ आती हैं, परन्तु परिश्रम द्वारा थोड़ी-बहुत सफलता भी मिलती है। ऐसा व्यक्ति धर्म का पूर्ण पालन नहीं कर पाता। वह अपनी गुप्त युक्तियों तथा कठिन परिश्रम के बल पर सभी क्षेत्रों में न्यूनाधिक सफलताएँ प्राप्त करता रहता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मिथुन लग्न : दशमभाव : केतु

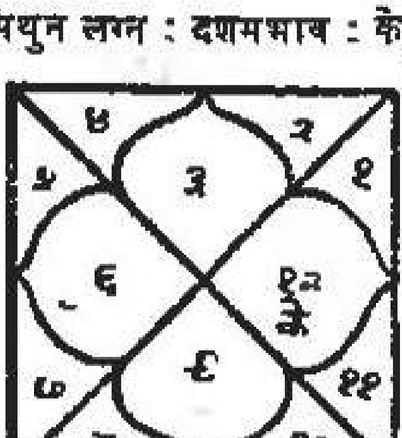

८३९

दसवें भाव में अपने शत्रु गुरु की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मान-प्रतिष्ठा की भी कभी-कभी बड़ी हानि उठानी पड़ती है। गुप्त युक्तियों तथा कठिन परिश्रम के बाद ही उसे सामान्य सफलता मिल पाती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मिथुन लग्न : एकादशभाव : केतु

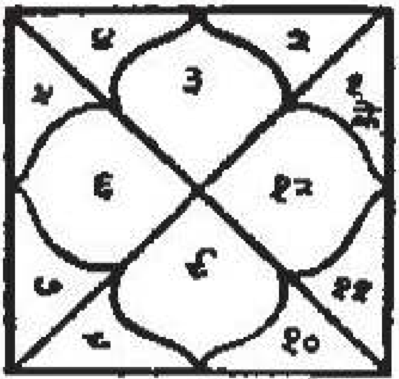

५५०

ग्यारहवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में कठिन परिश्रम करना पड़ता है तथा कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है। अपने धैर्य, साहस तथा परिश्रम से ही उसे अन्त में कठिनाइयों पर विजय तथा आमदनी के क्षेत्र में थोड़ी-बहुत सफलता मिलती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मिथुन लग्न : द्वादशभाव : केतु

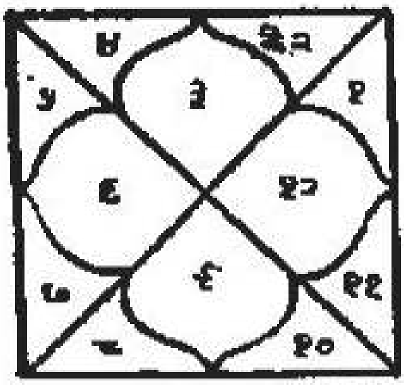

५५१

बारहवें भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, जिसके कारण उसे कभी-कभी भारी संकटों का सामना करना पड़ता है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी उसे कुछ परेशानी बनी रहती है। परन्तु ऐसा जातक अपनी हिम्मत, गुप्त युक्ति, परिश्रम तथा चतुराई के बल पर येन-केन-प्रकारेण अपना खर्च चलाता रहता है।